

वास्तु

बैडरूम का रखें खास ख्याल

घर में स्थित शयनकक्ष एक ऐसा स्थान है, जहां पर हम अपने जीवन का लगभग एक तिहाई हिस्सा व्यतीत करते हैं। पूरे घर में इस कक्ष का अपना अलग महत्व है। इसके महत्व के कारण ही वास्तु शास्त्रों में भी इसके बारे में विशेष बातें कही गई हैं। दिन भर की थकान और मानसिक परेशानियों से निपटकर हम इसी कक्ष से ताजगी लेकर निकलते हैं। इसलिए इस स्थान का वास्तु-संगत होना बेहद जरूरी है।

- वायव्य कोण (उत्तर-पश्चिम) में शयनकक्ष का होना अशुभ होता है। यह क्षेत्र अस्थिरता का क्षेत्र है। इस क्षेत्र में शयनकक्ष होने से जहां दंपत्य जीवन अस्तव्यस्त होता है, वहीं व्यावसायिक दृष्टि से भी गिरावट आती है।

- वर्गाकार तथा आयताकार शयनकक्ष उत्तम होता है। आसमान आकार का, अंग्रेजी अक्षर 'एल' के



आकार का अथवा गोलाकार शयनकक्ष अशुभ होता है।

- शयन कक्ष में मंदिर की स्थापना कदापि ना करें।
- अगर आपका पलंग चरमराता है, तो उसे फौरन ठीक करवाएं। यह शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के साथसाथ दंपत्य जीवन के लिए अशुभ फल देगा।

- शयन कक्ष का प्रवेश द्वार पलंग के एकदम सामने नहीं होना चाहिए।

- पलंग के नीचे कूड़ा-कंकट, जूते व अन्य फालतू समान न रखें।

- अगर दंपत्य जीवन में मतभेद रहते हों तो पलंग पर दो मैट्रेस की जगह इकहरा (सिंगल) मैट्रेस बिछाएं।

- पलंग को शहतीर, गार्डर अथवा बीम के नीचे न लगाएं। बीम के नीचे शयन करने से जहां अनिद्रा व मानसिक परेशानी पैदा होगी वहीं वैवाहिक जीवन में यह तनाव का भी कारण बनता है।

- वैसे तो शयन कक्ष में प्रतिबिंब पैदा करने वाले साजो समान को शुभ नहीं माना जाता। परंतु अगर शयनकक्ष से दर्पण, टैलीविजन आदि को हटाना मुमकिन न हो तो रात को उन्हें ढंककर सोएं।

- शयनकक्ष में जंगली व क्रूर जानवरों तथा दुख की अभिव्यक्ति करने वाले चित्र न लगाएं।

- वैवाहिक जीवन के आनंदयम क्षणों की याद ताजा करने वाले चित्र नैऋत्य कोण (दक्षिण-पश्चिम) में लगाएं।

- अगर आप बॉक्स-बैड का उपयोग करते हैं तो इसके भीतर रखे गए समान को व्यवस्थित करते रहें। टूटाफू टा समान बॉक्स बैड में ना रखें।

वास्तु और गृह निर्माण के साधारण नियम



वास्तु के साधारण नियमों का पालन यदि गृह निर्माण में किया जाए तो व्यक्ति निश्चित सफलता की ओर अग्रसर होता है, इसके विपरीत यदि इनका ध्यान न रखा जाए तो यह समस्याओं तथा विवाद का कारण बनता है।

- दक्षिण दिशा वरिष्ठ लोगों के लिए प्रशस्त है तथा शयन का स्थान है। यह स्थान गृहस्वामी का होता है तथा यहाँ से उसे आवश्यक ऊर्जा प्राप्त होती है। इस स्थान की ऊर्जा उसे सम्पूर्ण परिवार का दायित्व उठाने में सहायता करती है। इस स्थान पर शयन कक्ष में यह सावधानी बरतनी चाहिये कि यहां बच्चों को स्थान नहीं दें, वे यहां सोकर जिद्दी व हठीले हो जाएंगे।

- पश्चिम दिशा विद्याभ्यास की दिशा है। यहाँ पर बच्चों को स्थान दिया जाना चाहिए, बच्चों को यहाँ स्थान दिए जाने से उनका मन पढ़ाई में लगता है तथा उनमें अधिकाधिक समय वहाँ व्यतीत करने की आदत डलती है, इससे उनका समय नष्ट नहीं होता, वे अनुशासन में आते हैं तथा उन्नति के अवसर बढ़ जाते हैं।

- उत्तर दिशा औषधि के लिए प्रशस्त है। यहाँ पर भारी निर्माण नहीं कराना चाहिए। यहाँ पर भूमिगत जल या बोरिंग कराना शुभ रहता है।

- पूर्व दिशा स्नान का स्थान है तथा यहाँ पर भी भारी निर्माण नहीं कराया जाना चाहिए।

- नैऋत्य दिशा में अतिरिक्त 'शयन कक्ष' बनाया जा सकता है तथा घर का भारी सामान, अलमारियां, गहने इत्यादि रखे जा सकते हैं।

- वायव्यकोण में धान्य प्रस्तावित होता है अर्थात् यहाँ पर भंडारण की व्यवस्था (भंडार गृह) की व्यवस्था होती है, यह स्थान उच्चाटन की प्रवृत्ति लाता है,

अतः यहां पर कभी भी शयन कक्ष प्रस्तावित नहीं होने देना चाहिए, ना ही कभी यह स्थान बच्चों को दिया जाना चाहिए, वे दोस्तों में अधिक समय बिताने लगते हैं।

- ईशान कोण पूजा का स्थान है (देवगृह) तथा यहाँ भी भारी निर्माण वर्जित है, यहाँ पर भी भूमिगत जल या बोरिंग कराना शुभ होता है।

- अग्निकोण, रसोई के लिए प्रशस्त है तथा बिजली के मीटर एवं अन्य इलैक्ट्रिक उपकरणों को यहाँ स्थान दिया जा सकता है।

- अग्निकोण तथा पूर्व दिशा के मध्य का स्थान सत्य नामक नामक देवता का होता है और यह स्थान 'अनुसंधान एवं विकास'हेतु प्रयुक्त होता है, आधुनिक संदर्भ में यहाँ कम्प्यूटर को स्थान दे सकते हैं। प्रतिभा को उभारने में यह जगह मदद करती है। हालाँकि बच्चों व विद्याभ्यास दोनों हेतु पश्चिम दिशा मध्य ही श्रेष्ठ होती है, पर इस स्थान का भी उपयोग किया जा सकता है।

- पूर्व दिशा तथा ईशान दिशा के मध्य के स्थान का उपयोग किसी भी कार्य हेतु किया जा सकता है। 11. ईशान दिशा में पूजा के नाम से भारी मंदिर नहीं बनाना चाहिये।

- वायव्य कोण से पश्चिम दिशा का स्थान रोदन का स्थान होता है, यहाँ पर व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण भावनाओं को व्यक्त कर देता है, यहाँ पर भोजन, बैठक इत्यादि की व्यवस्था की जा सकती है।

- पश्चिम दिशा मध्य से नैऋत्य कोण तक स्थान विद्याभ्यास का होता है तथा यहाँ पर बच्चों के कक्ष के अंतर्गत पढ़ाई की टेबल प्रस्तावित की जा सकती है तथा कम्प्यूटर इत्यादि भी लगा सकते हैं। 14. नैऋत्य कोण से दक्षिण दिशा के मध्य 'पाखाने' या 'टॉयलेट' के लिए प्रस्तावित है, दक्षिण दिशा मध्य में शयन कक्ष बनाते समय संग में या अलग से शौचालय डाला जा सकता है। प्राचीन वास्तुशास्त्र में केवल वही जगह टॉयलेट के लिए बनाई गई है।

- मध्य स्थान या ब्रह्म स्थान खाली छोड़ा जाना चाहिए। आधुनिक परिस्थितियों में यदि सम्भव ना हो सके तो यहाँ भारी निर्माण न कराएं, न ही यहाँ पर खंभे इत्यादि खड़े किये जाएं और न ही यहाँ पर जल संग्रहण किया जाए। यहाँ पर लॉबी, खाली स्थान अत्यंत हल्की सजावट इत्यादि हो सकते हैं।

सिर्फ सार्वजनिक मंदिरों के लिए ही होते हैं, इस बात का विशेष ख्याल रखें।

- अपने शयनकक्ष में कभी भी मंदिर की स्थापना न करें। क्योंकि आपका शयन कक्ष रति क्रिया अर्थात रजो-तमो और वीर्य जैसी क्रियाओं का स्थल है। वहां पर सात्विक कर्मों के कारक मंदिर की स्थापना कदापि शुभ फल नहीं देगी।

- पूजा स्थल में देहरी जरूर बनवाएं। इसमें दरवाजा भी दो किवाड़ों वाला ही लगाया जाना चाहिए।

- पूजा स्थल के ऊपर टायलेट, स्टोर आदि जैसा अपवित्र स्थान न बनाएं।

- बिना आसन बिछाए कभी भी जप-तप या पूजा-पाठ न करें। कंबल का आसन सबसे उपयोगी माना जाता है।

- पूजा स्थल में एक ही देवता की प्रतिमा या चित्र स्थापित करें।

- पूजा करते समय आपका मुंह पूर्व, उत्तर अथवा ईशान की ओर हो तो शुभ फल मिलता है।

- पूजा में उपयोग किए जाने वाले बर्तन चांदी, तांबे अथवा कांसे के हों।

जल को देवता माना गया है वेदों में

ब्रह्मपुराण में कहा गया है कि ‘जल’ विष्णु का निवास स्थान (अथवा जल ही उनका स्वरूप) है। विष्णु ही ‘जल’ के स्वामी हैं। इस कारण सदैव जल में पापहारी विष्णु का स्मरण करना चाहिए। सभी देवगण जल रूप हैं। पितृगण भी जल रूप ही हैं। इस कारण पितरों से अपनी भलाई की अपेक्षा करने वाले को जल में ही पितरों का ‘तर्पण’ करना चाहिए। रुद्रयामल तन्त्र के अनुसार ‘जल के अधिपति’ श्री गणेश जी हैं। वेदों में जल को एक महनीय देवता माना गया है। ऋग्वेद के चार स्वतंत्र सूक्तों में जल की देवता रूप में स्तुति की गयी है। इसके अतिरिक्त कई प्रकीर्ण सूक्तों के कतिपय मंत्रों में इनकी स्तुतियां प्राप्त होती हैं। साथ ही वाजसनेयी, काठक, कपिल, काण्व, तैत्तिरीय, मैत्रायणीय आदि संहिताओं के अतिरिक्त अथर्वण संहिता में भी जल देवता से संबंधित अनेक सूक्त तथा मंत्र भी उपलब्ध होते हैं। आचार्य यास्क ने जल देवता को मध्यम स्थानीय देवता मानकर प्रसिद्ध अप्सूक्त की विस्तृत व्याख्या की है।

मनुष्य तथा अन्य प्राणियों के शरीर में जल का पर्याप्त भाग है और उसे पान किये बिना बहुत देर तक कोई जीवित नहीं रह सकता तथा मनुष्य की पवित्रता संबंधी शौच, स्नान, मार्जन, प्रक्षालन, देवपूजन आदि सभी क्रियाएं एकमात्र जल पर ही आलम्बित रहती हैं। संध्यादि कर्मों में स्नान, मार्जन, अघमर्षण आदि से सूर्यार्ध्व पर्यन्त जल का ही मुख्य प्रयोग होता है। कृषि, अन्नपाक और वस्त्र आदि प्रक्षालन की क्रियाओं में जल देवता ही मुख्य कारण हैं। नदी आदि तीर्थों तथा भूमि के भी अन्तर्भाग में जल ही व्याप्त हैं। इसीलिये सम्पूर्ण प्राणी जलाधार पर ही अधिष्ठित रहते हैं और मत्स्यादि जलचों



के लिए तो जल देवता ही सब कुछ हैं। इसलिये इन्हें जगत का जीवन कहा गया है और कोई भी प्राणी इनके उपकारों का बदला नहीं चुका सकता। अतः जल देवता की जितनी भी पूजा उपासना की जाये अल्प ही है। जल का एक नाम जीवन है। यह प्राणी के जीवन का आधार है। इस जल के अधिपति देवता वरुण हैं। वेद ने आदेश दिया है कि हम प्रतिदिन जलाधिपति वरुण की नित्य प्रार्थना इस प्रकार किया करें- ‘हे दिव्य जलाधिपति वरुणदेव! आप हमारे स्नान और पान में सुख

प्रदान करते रहें। यह जल हमारे रोगों का शमन करे और सारी भीतियों को भी भगाता रहे।’

ऋग्वेद में भी आया है कि वरुण देवता के गृह जलीय होते हैं। विश्वकर्मा ने इनकी सभा जल के भीतर रहकर ही बनायी थी। वहां प्रह्लाद, बलि आदि दैत्य, वासुकि आदि नाग उनकी उपासना में रत रहते हैं। जल के साथ वरुण देवता के इस घनिष्ठ संबंध को सूचित करने के लिए शास्त्र ने इनके अम्बुद, अम्बुपति, अपाम्पति, जलाधिपति, यादसाम्भर्ता आदि बहुत-से नाम बताये हैं। हरिवंश, भविष्यपर्व में वर्णन आता है कि उपयुक्त अवसर आने पर इनकी सहायता के लिए चारों ओर से समुद्र इनको घेरकर खड़े हो जाते हैं। नाग, कच्छप और मत्स्य भी इनको चारों ओर से घेरकर अपनी कर्तव्यनिष्ठा निभाते हैं। निरुक्त ने ऋग्वेद की एक ऋचा उद्धृत कर यह बताया है कि वरुण देवता मेघ मण्डल के जल में विचरण करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर पृथ्वी पर जल बरसाते हैं। ये निरन्तर मनुष्यों के कल्याण में लगे रहते हैं।

रूप एक, गुण अनेक

**माई ऐसा पूत जण,कै दाता कै सूर।
नाहिरह तू बाँझड़ी,मती गवावें नूर।।
पुत्रवती जुबतीजग सोई।
रघपतिभगतुजासुसुतुहोई।।**

श्री हनुमान अंजना नामक माता के आनंद को बढ़ाने वाले हैं। यह आनंद केवल दो बातों से होता है-पुत्र की वीरता से या पुत्र की रामभक्तिसे। यह दोनों बातें श्री हनुमान के जीवन में पद-पद पर दृष्टिगोचर होती है। श्री हनुमान एकादश रूद्रों के मध्य ग्यारहवेंरूद्रहैं। वे परम कल्याण स्वरूप साक्षात शिव है। पुराणों में हनुमान जी के रूद्रावतारत्मकप्रसंग तथा वर्णन प्रचुरतासे प्राप्त होते हैं। सभी पुराणों में राम कथा के बारे में चरित्र चित्रण मिलता है।

श्री हनुमान की जन्म कथा दिव्य एवं रहस्यमयी है। हनुमान ने भगवान श्रीराम के आदर्श राम राज्य स्थापना में जो सहयोग दिया,वह विभिन्न रामायणों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। उन्होंने अपना तम-मन सर्वस्व श्रीराम के चरणों में समर्पित कर दिया। पवन सुत के संपूर्ण गुणों का वर्णन करना तो असंभव है तथापि उनकी स्वामिभक्ति, अपूर्व त्याग, ज्ञान की पूर्णत,निर्भिमानिताएवं अद्भुत चालतुर्य गुण जो मानव जाति के लिए अनुकरणीय हैं, उनका उल्लेख करना इनके प्रति सच्ची भक्ति है।

स्वामिभक्ति श्री हनुमान जी सातवीं दास्य भक्ति के आचार्य माने जाते हैं। स्वामी की आज्ञा पालन ही सेवक का धर्म है। लंका प्रवेश, लक्ष्मण मूर्छा,रावण वध और उसके बाद अयोध्या लीला में भी हमें पवनसुतकी भक्ति का दर्शन होता है। यही कारण है कि हम आज भी हमें गांव-गांव में छोटे-छोटे रूप में प्रतिष्ठित श्री हनुमान के दर्शन होते हैं।

निर्भमानित्वअभिमानंसुरापानम्कह कर शास्त्रों ने अभिमान को सुरापान के समान त्याज्य माना गया है। हनुमान जी में लेशमात्र भी अभिमान नहीं था। निर्भमानित्वभक्ति के मार्ग में भूषण स्वरूप है। इसी इनके गुण के देखकर स्वयं श्री राम ने कहा कपिवरतुम्हारे किए उपकारों के बदले में अपना प्राण अर्पण कर दूँ तो



भी अन्य उपकारों का ऋण मेरे जिम्मे रह जाता है। अतःहनुमान जी ने तुरंत उत्तर दिया- सो सब तवप्रताप रघुराई नाथ न कछूमोरी प्रभुताई। यही तो इनके जीवन की कृतार्थताहै कि श्रीराम उनके ऋणी हैं।

अदभुतचालतुर्य जिस भक्त के ऊपर भगवान की कृपा होती है, उसे वे अपने सदगुणोंका दान देते हैं। सीता को

कब चमकेगे सफलता के सितारे

कई बार जीवन में अवसर आते है, चाँस मिलता है मगर बेस्ट परफार्म करने के बाद भी या तो वह मौका हाथ से निकल जाता है या फिर उस कार्य में तकलीफें ही आती-जाती है। ऐसी स्थिति बार-बार उत्पन्न होने पर किसी का भी डिप्रेशन होना स्वाभाविक है और युवा जिनके लिए जीवन का एक-एक क्षण कीमती होता है, इस डिफिट के चलते नेगेटिव सोच के शिकार होकर डिप्रेशन के अंधेरे में चले जाते हैं।

आइए देखें, ग्रहों की इसमें क्या भूमिका है। जब कुंडली में कहीं भी शनि-मंगल, राहु-मंगल, राहु-शनि, शनि-केतु जैसी युति-प्रतियुति हो तो ये जीवन में अनसर्टेनिटी का निर्माण कर देती है। आपके फोकस को कम करती है और कई बार गलत डिसीजन के लिए तैयार रखें। ख़ूब मेहनत और व्यायाम करने की आदल डालें। बड़ों का व स्त्री का भूल कर भी अपमान न करें। गुरु की शरण में रहें।

इनके अलावा इस कुयोग के उपाय यानि ग्रह-शांति, जप, दान करें। मुख्य ग्रह यानी लग्न के स्वामी और चंद्रमा की मजबूती के उपाय करें। फिर धैर्य के साथ आगे बढ़ते जाएँ।



ईश्वरीय दिशा है ईशान

पूजा स्थल एक अहम और महत्वपूर्ण स्थल है, जहां पर हम अपने अराधयदेव की पूजा करते हैं। यह स्थान घर में अगर स्थापित करना हो तो ऐसी जगह पर स्थापित किया जाए जहां पर वातावरण पवित्र और शांतिपूर्ण हो। यह स्थान अध्यात्म से जुड़ा है और हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस बात को नजर-अंदाज नहीं करना चाहिए। हमारी शास्त्रों में भी इस स्थान का महामत्य बताया गया है। वहां तक कि बड़े-बड़े भवनों में भी विशेष पूजाघर की स्थापना की जाती है। पर यह जरूर ध्यान में रखें कि घर में पवित्र स्थान पर स्थापित पूजागृह ही सुख-शांति और ऐश्वर्य की प्राप्ति का कारक हो सकता है। वास्तु के अनुसार किस तरह पूजागृह स्थापित करना चाहिए, आइए जानें-

- वास्तु शास्त्र के अनुसार पूजागृह को ईशान (उत्तर-पूर्व दिशा) कोण में ही स्थापित करना ऋहिए। ईशान शब्द ईश अर्थात ईश्वर से बना है, इसलिए ईश्वर के घर की स्थापना ईशान कोण में ही शुभ होगी।

- घर में स्थापित किए जाने वाले मंदिर या पूजागृह की छत अन्य कमरों की तरह समतल ही रखें। उस पर पिरामिड या गुंबद कदापि स्थापित न करें। गुंबद, कलश या पिरामिड

- अपने शयनकक्ष में कभी भी मंदिर की स्थापना न करें। क्योंकि आपका शयन कक्ष रति क्रिया अर्थात रजो-तमो और वीर्य जैसी क्रियाओं का स्थल है। वहां पर सात्विक कर्मों के कारक मंदिर की स्थापना कदापि शुभ फल नहीं देगी।

- पूजा स्थल में देहरी जरूर बनवाएं। इसमें दरवाजा भी दो किवाड़ों वाला ही लगाया जाना चाहिए।

- पूजा स्थल के ऊपर टायलेट, स्टोर आदि जैसा अपवित्र स्थान न बनाएं।

- बिना आसन बिछाए कभी भी जप-तप या पूजा-पाठ न करें। कंबल का आसन सबसे उपयोगी माना जाता है।

- पूजा स्थल में एक ही देवता की प्रतिमा या चित्र स्थापित करें।

- पूजा करते समय आपका मुंह पूर्व, उत्तर अथवा ईशान की ओर हो तो शुभ फल मिलता है।

- पूजा में उपयोग किए जाने वाले बर्तन चांदी, तांबे अथवा कांसे के हों।

स्वस्तिक से पाएं सकारात्मक ऊर्जा

सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करने के तरीकों में स्वस्तिक का महत्वपूर्ण स्थान है। इसीलिए स्वस्तिक ने मंगल चिन्हों में प्रतिष्ठा प्राप्त की है। मंगल प्रसंगों के अवसर पर पूजा स्थान तथा दरवाजे की चौखट और प्रमुख दरवाजे के आसपास स्वस्तिक चिन्ह बनाने की परंपरा है।

वे स्वस्तिक कतई परिणाम नहीं देते, जिनका संबंध प्लास्टिक, लोहा, स्टील या लकड़ी से हो। सोना, चांदी, तांबा अथवा पंचधातु से बने स्वस्तिक प्राण प्रतिष्ठित करवाकर चौखट पर लगवाने से सुखद परिणाम देते हैं, जबकि रेली-हल्दी-सिंदूर से बनाए गए स्वस्तिक आत्मसंतुष्टि ही देते हैं। अशांति दूर करने तथा पारिवारिक प्रगति के लिए स्वस्तिक यंत्र रवि-



पुष्य, गुरु-पुष्य तथा दीपावली के अवसर पर लक्ष्मी श्रीयंत्र के साथ लगाना लाभदायक है।

अकेला स्वस्तिक यंत्र ही एक लाख बовिस धनात्मक ऊर्जा उत्पन्न करने में सक्षम है। वास्तुदोष के निवारण में भी चीनी कछुआ ७०० बोविस भर

देने की क्षमता रखता है, जबकि गणेश की प्रतिमा और उसका वैकल्पिक स्वस्तिक आकार एक लाख बोविस की समानता रहने से प्रत्येक घर में स्थापना वास्तु के कई दोषों का निराकरण करने की शक्ति प्रदान करता है।

गाय के दूध, गाय के दूध से बने हुए दही और घी, गोनीत, गोबर, जिसे पंचगव्य कहा जाता है,

को समानुपात से गंगा जल के साथ मिलाकर आम अथवा अशोक के पत्ते से घर तथा व्यावसायिक केंद्रों पर प्रतिदिन छिटकाव करने से ऋणात्मक ऊर्जा का संहार होता है। तुलसी के पौधे के समीप शुद्ध घी का दीपक प्रतिदिन लगाने से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है।

‘दत्तन्ना अलाय बलाय’ - आत्मीयता और रिश्तों का उत्सव!

अलग-अलग विचार.. भिन्न राजनीतिक सिद्धांत.. विविध जीवनशैलियाँ.. फिर भी त्योहार के अवसर पर जब सभी लोग एक स्थान पर एकत्र होते हैं, तो उस आनंद की अनुभूति ही कुछ अलग होती है। आत्मीय अभिवादन, स्नेहभरे आलिंगन, परस्पर सम्मान और सांस्कृतिक वैभव का अनूठा संगम है ‘दत्तन्ना अलाय बलाय’। राजनीति से ऊपर उठकर लोगों को एक-दूसरे के करीब लाने और मित्रता को नया अर्थ देने वाला यह आत्मीय समागम दो दशकों से अधिक की यात्रा तय करते हुए तेलंगाना की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बन गया है। एक पर्वोत्सव के रूप में शुरू हुआ यह आयोजन आज सामाजिक एकता, सद्भावना और राष्ट्रीय एकता का प्रोत्साहित करने वाले विशिष्ट मंच के रूप में विकसित हो चुका है।

तेलंगाना आंदोलन के दौर में जन्मा आत्मीयता का मंच

वर्ष 2005 की बात है। संयुक्त आंध्र प्रदेश में तेलंगाना राज्य के गठन का आंदोलन धीरे-धीरे गति पकड़ रहा था। उस समय केंद्र और राज्य, दोनों में कांग्रेस की सरकारें थीं। राजनीतिक मतभेद और क्षेत्रीय आकांक्षाएँ सार्वजनिक विमर्श का प्रमुख हिस्सा बन रही थीं। ऐसे दौर में राजनीतिक भिन्नताओं से ऊपर उठकर लोगों के बीच दूरियाँ कम करने और आपसी मित्रता को मजबूत बनाने के सद्देश्य से ‘अलाय बलाय’ की परिकल्पना साकार हुई। विजयादशमी के पावन अवसर पर विभिन्न राजनीतिक दलों के नेत-1ओं, सामाजिक क्षेत्र की प्रतिष्ठित हस्तियों, बुद्धिजीवियों और कलाकारों को एक मंच पर लाने के संकल्प के साथ श्री बंडारू दत्तात्रेय जी ने इस आयोजन की शुरुआत की। वर्ष 2005 में दशहरे के अगले दिन हैदराबाद में टैंक बंड के निकट इंदिरा पार्क परिसर स्थित तत्कालीन मडुपु चंद्रैया गार्डन्स में पहला ‘अलाय बलाय’ समारोह आयोजित किया गया।

पहले आयोजन में लगभग 350 लोग ही शामिल हुए थे। लेकिन इस पहल के पीछे की सोच उस संख्या से कहीं अधिक व्यापक और महत्वपूर्ण थी। विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं, शिक्षाविदों, साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों और कलाकारों का एक मंच पर आकर आत्मीयता से मिलना उस समय अपने आप में एक विशेष संदेश था। राजनीतिक मतभेदों को किनारे रखकर एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करने और मित्रता को नई परिभाषा देने का प्रयास यहीं से शुरू हुआ।

समय के साथ इस छोटी-सी पहल को लोगों का व्यापक समर्थन



मिला और इसने तेलंगाना के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया।

आत्मीयता का पर्याय.. बंडारू दत्तात्रेय

‘अलाय बलाय’ का नाम आते ही श्री बंडारू दत्तात्रेय जी का स्मरण होना स्वाभाविक है। इस आयोजन की परिकल्पना करने, इसे स्वरूप देने और निरंतर प्रोत्साहित करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सार्वजनिक जीवन में अनेक दायित्व निभाने वाले दत्तात्रेय जी ने राजनीति के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों को भी सदैव महत्व दिया।

लोकतंत्र में राजनीतिक मतभेद स्वाभाविक हैं। विभिन्न विचारधाराओं के बीच प्रतिस्पर्धा भी लोकतांत्रिक व्यवस्था का अभिन्न अंग है। लेकिन इन मतभेदों के कारण व्यक्तिगत संबंधों में कटुता नहीं आनी चाहिए। ‘अलाय बलाय’ इसी मूल्यवान संदेश को अपने अनूठे अंदाज में प्रस्तुत करता है।

विभिन्न राजनीतिक दलों से जुड़े नेता एक ही मंच पर बैठकर बातचीत करते हैं, एक-दूसरे का आत्मीयता से अभिवादन करते हैं और परस्पर सम्मान की भावना व्यक्त करते हैं। यह दृश्य लोकतांत्रिक संस्कृति में संवाद, सहिष्णुता और आपसी सम्मान के महत्व को रेखांकित करता है।

किसी कार्यक्रम की शुरुआत करना एक बात है, लेकिन उसे निरंतर जारी रखना एक बड़ी चुनौती है। प्रत्येक वर्ष विजयादशमी के अगले दिन इस आयोजन को आयोजित करते रहने के पीछे आयोजकों की प्रतिबद्धता, सहयोगियों का योगदान और जनता का विश्वास रहा है। इसी निरंतर प्रयास ने व्यक्तिगत पहल के रूप में शुरू हुए ‘अलाय बलाय’ को एक संस्थागत आयोजन का स्वरूप प्रदान किया।

350 लोगों से हजारों तक.. जनसमर्थन की मिसाल

शुरुआती वर्षों में सीमित संख्या में लोगों की भागीदारी से शुरू हुए इस आयोजन को समय के साथ व्यापक लोकप्रियता मिली। राजनीतिक नेता, जनप्रतिनिधि, विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिष्ठित हस्तियाँ, साहित्यकार, कलाकार, खिलाड़ी, शिक्षाविद, विद्यार्थी, महिलाएँ और सामाजिक कार्यकर्ता इसमें भागीदार बनते गए। इस प्रकार समाज के विविध वर्गों की सहभागिता ने आयोजन का दायरा लगातार बढ़ाया।

वर्ष 2005 में हैदराबाद के लोअर टैंक बंड स्थित इंदिरा पार्क परिसर के मडुपु चंद्रैया गार्डन्स में आयोजित इस कार्यक्रम में लोगों की संख्या बढ़ने पर इसे राजभवन रोड स्थित जया गार्डन में स्थानांतरित किया गया। वहाँ भी भीड़ बढ़ने के कारण कुछ वर्षों बाद इसे नेकेलेस रोड स्थित जलविहार में आयोजित किया जाने लगा। वहाँ भी हजारों लोगों की उपस्थिति के चलते पिछले पाँच वर्षों से नांपल्ली स्थित प्रदर्शनी मैदान में इसका आयोजन किया जा रहा है।

स्थल बदलते रहे, लेकिन इस उत्सव के प्रति लोगों का आकर्षण और उत्साह हर वर्ष बढ़ता गया।

वर्ष 2026 में विजयादशमी के अगले दिन हैदराबाद के प्रदर्शनी मैदान में आयोजित समारोह में अनुमानतः 18 हजार से अधिक लोग शामिल हुए। पहले आयोजन में शामिल लगभग 350 लोगों की तुलना में यह संख्या इसकी व्यापक लोकप्रियता और उल्लेखनीय



दो दशकों का सफर.. विविधता में एकता का प्रतीक

राजनीति से परे मित्रता की सुगंध.. तेलंगाना की संस्कृति को राष्ट्रीय पहचान दिलाने वाला मंच

विस्तार को दर्शाती है। दो दशकों के दौरान ‘अलाय बलाय’ ने जिस प्रकार जनसमर्थन अर्जित किया है, यह उसका स्पष्ट प्रमाण है।

यह केवल आयोजन में शामिल होने वाले लोगों की संख्या में हुई वृद्धि नहीं है, बल्कि एक सकारात्मक विचार को समाज से मिली स्वीकृति और विभिन्न वर्गों को जोड़ने के प्रयास को प्राप्त सामाजिक मान्यता का भी प्रतीक है। राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों से जुड़े लोगों की एक मंच पर भागीदारी ने इस आयोजन की व्यापकता को और बढ़ाया है।

उत्सव में आत्मीय मुलाकातें.. समाज के लिए संदेश

‘दत्तन्ना अलाय बलाय’ की विशेषता केवल प्रतिष्ठित व्यक्तियों की उपस्थिति और उनके संबोधनों तक सीमित नहीं है। विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोगों का एक-दूसरे से मिलना, अपने अनुभव साझा करना और नए संबंध स्थापित करना इस आयोजन की वास्तविक आत्मा है। राजनीतिक नेताओं के लिए यह आपसी संबंधों को मजबूत करने का मंच है। कलाकारों के लिए अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर है। साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों के लिए अपने विचार साझा करने का माध्यम है। वहीं, आम नागरिकों को विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिष्ठित हस्तियों से निकटता से मिलने और उनसे जुड़ने का अवसर मिलता है। इस प्रकार एक ही आयोजन अनेक सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है।

आज जब समाज में बढ़ते मतभेदों और दूरियों को लेकर अक्सर चर्चा होती है, तब ‘अलाय बलाय’ यह संदेश देता है कि अलग-अलग विचार रखने वाले लोग भी एक साथ बैठ सकते हैं, संवाद कर सकते हैं और एक-दूसरे के प्रति सम्मान बनाए रख सकते हैं। एकता का अर्थ यह नहीं है सभी के विचार एक जैसे हों। वास्तविक एकता तो विविध विचारों के बीच भी परस्पर सम्मान और सद्भाव के साथ साथ रहने की भावना में निहित है। यही मूल्यवान संदेश इस आयोजन को विशिष्ट बनाता है।

तेलंगाना की संस्कृति और परंपराओं की सुगंध

‘अलाय बलाय’ में तेलंगाना की संस्कृति और परंपराओं को विशेष स्थान प्राप्त है। तेलंगाना के ग्रामीण जीवन को प्रतिबिंबित करने वाले लोककला रूप, लोक प्रस्तुतियाँ, पारंपरिक वेशभूषाएँ और क्षेत्रीय व्यंजन इस आयोजन के प्रमुख आकर्षण हैं। पीढ़ियों से चली आ रही परंपराओं, कलाओं और अतिथि-सत्कार की विशिष्ट शैली को एक ही मंच पर प्रस्तुत करने से तेलंगाना की सांस्कृतिक विरासत को व्यापक पहचान मिलती है।

तेलंगाना की संस्कृति केवल कुछ लोककलाओं और व्यंजनों तक सीमित नहीं है। वहाँ की भाषा की मधुरता, अभिवादन में झलकने वाला अपनापन, त्योहारों में दिखाई देने वाली सामूहिकता और सुख-दुःख में एक-दूसरे का साथ निभाने की सामाजिक भावना भी इसका अभिन्न हिस्सा है। ‘अलाय बलाय’ इन सभी सांस्कृतिक विशेषताओं को एक मंच पर प्रस्तुत कर उनकी विशिष्टता से लोगों को परिचित कराता है।

जब एक क्षेत्र की संस्कृति दूसरे क्षेत्र तक पहुँचती है, तभी परस्पर समझ और सद्भाव का विस्तार होता है। विभिन्न राज्यों से आने वाली प्रतिष्ठित हस्तियों की भागीदारी के कारण तेलंगाना की परंपराओं को राष्ट्रीय स्तर पर परिचित कराने का अवसर मिलता है। साथ ही, अन्य



क्षेत्रों की संस्कृतियों के प्रति सम्मान और समझ विकसित करने में भी ऐसे आयोजन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

स्थानीय संस्कृति का संरक्षण जितना आवश्यक है, उतना ही महत्वपूर्ण उसका अन्य क्षेत्रों तक प्रसार भी है। इन दोनों उद्देश्यों को साथ लेकर चलने वाला ‘अलाय बलाय’ तेलंगाना के सांस्कृतिक वैभव को राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत करने वाला विशिष्ट आयोजन बन गया है।

राष्ट्रीय स्तर पर विस्तारित होती यात्रा

शुरुआत में हैदराबाद तक सीमित रहे इस आयोजन को धीरे-धीरे पूरे तेलंगाना में पहचान मिली। इसके बाद इसने देश के विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिष्ठित हस्तियों का ध्यान आकर्षित किया। भारत के उपराष्ट्रपति, केंद्रीय मंत्री, विभिन्न राज्यों के राज्यपाल, मुख्यमंत्री, विधानसभा अध्यक्ष, विधान परिषदों के प्रमुख, जनप्रतिनिधि, कलाकार, खिलाड़ी, पद्म पुरस्कार विजेता और बुद्धिजीवी अलग-अलग वर्षों में इसमें भाग लेते रहे हैं।

विभिन्न राजनीतिक दलों से जुड़े नेताओं का एक ही मंच पर अपने विचार साझा करना इस आयोजन के महत्व को और बढ़ाता है। राजनीतिक पृष्ठभूमि अलग होने के बावजूद सामाजिक एकता,

सांस्कृतिक संरक्षण और परस्पर सम्मान जैसे साझा विषयों पर विचार-विमर्श का अवसर यहाँ मिलता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का स्वयं समारोह में उपस्थित न हो पाने की स्थिति में भी श्री बंडारू दत्तात्रेय जी को शुभकामना संदेश भेजना इस आयोजन को मिली पहचान को दर्शाता है। ऐसे संदेश कार्यक्रम के उद्देश्यों और मूल भावना को व्यापक स्तर पर पहुँचाने में सहायक होते हैं।

हालाँकि, किसी आयोजन की वास्तविक सफलता का आकलन केवल उसमें शामिल होने वाली प्रतिष्ठित हस्तियों या उनके संबोधनों के आधार पर नहीं किया जा सकता। वह समाज में किन मूल्यों को प्रोत्साहित करता है? लोगों के बीच किस प्रकार के संबंध विकसित करता है? और आने वाली पीढ़ियों को क्या संदेश देता है? ये ऐसे प्रश्न हैं, जो किसी आयोजन के दीर्घकालिक महत्व को निर्धारित करते हैं।

जब कोई उत्सव इन कसौटियों पर खरा उतरता है, तभी वह एक वार्षिक कार्यक्रम से आगे बढ़कर सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यों का सशक्त मंच बनता है।

वाधाओं के बीच भी कायम रहा संकल्प

दो दशकों की यात्रा में ‘अलाय बलाय’ के आयोजन को कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ा। एक अवसर पर श्री बंडारू दत्तात्रेय जी के पुत्र के निधन और दूसरे अवसर पर कोरोना महामारी के कारण सामान्य जनजीवन ठप हो जाने से आयोजन में व्यवधान आया। उस समय बड़ी संख्या में लोगों के एकत्र होने वाले कार्यक्रमों का आयोजन कठिन हो गया था।

इन परिस्थितियों के बावजूद इस परंपरा को आगे बढ़ाने का संकल्प बना रहा। पूरी यात्रा में केवल दो अवसरों पर आयोजन में विराम आना और शेष वर्षों में इसे जारी रखने के प्रयास आयोजकों की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

प्रत्येक वर्ष विजयादशमी के अवसर पर आयोजित होने वाले इस समारोह को ऐसी पहचान दिलाना कि लोग इसका इंतजार करें, निरंतर प्रयास और सामूहिक सहयोग का परिणाम है।

त्योहारों का मूल उद्देश्य लोगों को जोड़ना, आत्मीयता बढ़ाना और समाज में परस्पर सहयोग को मजबूत करना है। ‘अलाय बलाय’ भी इसी भावना के अनुरूप अपनी यात्रा जारी रखे हुए है।

जिम्मेदारी का हस्तांतरण.. श्रीमती बंडारू विजयलक्ष्मी की अग्रणी भूमिका

किसी संस्था या आयोजन को लंबे समय तक सफलतापूर्वक जारी रखने के लिए व्यक्तिगत प्रतिबद्धता के साथ-साथ सक्षम नेतृत्व और संस्थागत निरंतरता भी आवश्यक होती है। श्री बंडारू दत्तात्रेय जी के राज्यपाल का दायित्व संभालने के बाद ‘अलाय बलाय’ के आयोजन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ उनकी पुत्री श्रीमती बंडारू विजयलक्ष्मी जी को सौंपी गईं। वर्तमान में वह ‘अलाय बलाय फाउंडेशन’ की चेयरपर्सन के रूप में इस आयोजन को आगे बढ़ा रही हैं।

अपने पिता द्वारा शुरू किए गए उद्देश्य को आगे बढ़ाने के साथ-साथ वह आयोजन की व्यवस्थाओं में अनुशासन बनाए रखने और विभिन्न वर्गों की भागीदारी बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं। हजारों अतिथियों की उपस्थिति वाले कार्यक्रम में निमंत्रण, मंच व्यवस्था,



सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, अतिथियों के बीच समन्वय और आतिथ्य जैसी अनेक जिम्मेदारियों को सुचारु रूप से निभाने के लिए प्रभावी योजना और बेहतर प्रबंधन आवश्यक है।

इन जिम्मेदारियों को स्वीकार कर आयोजन को आगे बढ़ाना श्रीमती बंडारू विजयलक्ष्मी जी की संस्थागत निरंतरता के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। एक पीढ़ी द्वारा शुरू किए गए सामाजिक कार्यक्रम को अगली पीढ़ी द्वारा जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ाना निश्चित रूप से सराहनीय है।

हालाँकि, किसी भी आयोजन की दीर्घकालिक सफलता तभी सुनिश्चित होती है, जब वह कुछ व्यक्तियों के प्रयासों तक सीमित न रहकर व्यापक जनभागीदारी और सामाजिक सहयोग के साथ आगे बढ़े। भविष्य में ‘अलाय बलाय’ को और अधिक व्यापक बनाने के लिए इस सामूहिक जिम्मेदारी की भावना को बनाए रखना आवश्यक है।

आतिथ्य में भी अपनापन ही सर्वोपरि

‘अलाय बलाय’ में हजारों लोगों के लिए आतिथ्य की व्यवस्था करना प्रबंधन की दृष्टि से एक बड़ी जिम्मेदारी है। विभिन्न क्षेत्रों से

आने वाले अतिथियों, जनप्रतिनिधियों, कलाकारों और अन्य सहभागियों की आवश्यकताओं का समन्वय करना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों को निर्धारित समय पर संचालित करना और पारंपरिक व्यंजनों की व्यवस्था करना जैसे अनेक कार्य इसमें शामिल हैं।

लेकिन आतिथ्य का अर्थ केवल भोजन परोसना नहीं है। आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का सम्मानपूर्वक स्वागत करना, उसकी भागीदारी को महत्व देना और उसे यह अनुभव कराना कि वह भी इस उत्सव का अभिन्न हिस्सा है, उतना ही महत्वपूर्ण है। आत्मीयता से भरा वातावरण ही ऐसे आयोजनों को लोकप्रियता और व्यापक जनस्वीकृति दिलाता है।

जब समारोह में शामिल होने वाला प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को एक बड़े सामाजिक परिवार का हिस्सा महसूस करता है, तभी ऐसे आयोजनों का वास्तविक उद्देश्य पूरा होता है। इस भावना को और मजबूत बनाए रखना आयोजकों की निरंतर जिम्मेदारी है।

पिछली उपलब्धियों से भविष्य के लक्ष्यों की ओर

वर्ष 2005 में लगभग 350 लोगों की भागीदारी से शुरू हुआ ‘अलाय बलाय’ वर्ष 2026 तक हजारों लोगों के सहभागिता वाले आयोजन के रूप में विस्तारित हो चुका है। यह अपने आप में एक उल्लेखनीय यात्रा है। लेकिन इस उपलब्धि को केवल अतीत की सफलता तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए।

भविष्य में युवाओं की भागीदारी बढ़ाने, तेलंगाना की लोककलाओं को व्यापक मंच प्रदान करने, लुप्त होती परंपराओं से नई पीढ़ी को परिचित कराने और विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृतियों के बीच आपसी समझ विकसित करने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

स्कूलों और कॉलेजों के विद्यार्थियों, युवा कलाकारों तथा साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश कर रही नई पीढ़ी को इस मंच से और अधिक निकटता से जोड़ा जा सकता है। तेलंगाना की पारंपरिक कलाओं के प्रति युवाओं की रुचि बढ़ाने, स्थानीय कलाकारों को प्रोत्साहित करने और लोककलाओं के संरक्षण के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त सामाजिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण, भाईचारे और विविधता के प्रति सम्मान जैसे विषयों पर सार्थक चर्चाओं का आयोजन भी किया जा सकता है। विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिष्ठित हस्तियों, युवाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं को एक मंच पर लाकर समाजोपयोगी विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित किया जा



सकता है।

ऐसे प्रयासों से ‘अलाय बलाय’ केवल एक वार्षिक उत्सव न रहकर वर्षभर सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने वाला मंच बन सकता है। पिछले दो दशकों की उपलब्धियों को आधार बनाकर आने वाली पीढ़ियों के लिए नए अवसर पैदा करना इसकी भावी यात्रा का महत्वपूर्ण लक्ष्य होना चाहिए।

एकता ही विजयादशमी का वास्तविक संदेश

विजयादशमी को बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक माना जाता है। इसी पर्व के अगले दिन आयोजित होने वाला ‘अलाय बलाय’ भी एक महत्वपूर्ण संदेश देता है। लोगों के बीच गलतफहमियों पर समझ की, मतभेदों पर संवाद की और दूरियों पर आत्मीयता की विजय होनी चाहिए।

राजनीतियाँ बदल सकती हैं। सरकारें बदल सकती हैं। नेतृत्व बदल सकता है। लेकिन लोगों के बीच मित्रता, परस्पर सम्मान और सामाजिक एकता जैसे मूल्य सदैव बने रहने चाहिए। राजनीतिक विचारधाराएँ अलग-अलग होने के बावजूद सामाजिक संबंधों को सम्मान और सद्भाव के साथ कायम रखा जा सकता है। ‘अलाय बलाय’ की यात्रा इसी विश्वास को मजबूत करती है।

श्री बंडारू दत्तात्रेय जी द्वारा शुरू की गई इस आत्मीय परंपरा को श्रीमती बंडारू विजयलक्ष्मी जी आगे बढ़ा रही हैं। इस आयोजन को जनता से मिल रहा व्यापक समर्थन जहाँ इसकी लोकप्रियता को दर्शाता है, वहीं इसके पीछे निहित मूल भावना को समाज में निरंतर बनाए रखने की जिम्मेदारी भी बढ़ाता है।

समारोह का सफल आयोजन जितना महत्वपूर्ण है, उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है इसके पीछे छिपे सद्भाव, मित्रता और सामाजिक एकता के संदेश को निरंतर जीवित रखना।

‘अलाय बलाय’ केवल एक उत्सव नहीं.. यह लोगों को जोड़ने वाला सेतु है। राजनीति से ऊपर उठकर आत्मीयता से मिलने का मंच है। तेलंगाना की संस्कृति को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने वाला माध्यम है। विविधता में एकता को व्यवहार में उतारने वाला सामाजिक संदेश है।

दो दशकों की यह यात्रा आयोजन के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। लेकिन इस यात्रा की वास्तविक सार्थकता तभी सिद्ध होगी, जब परस्पर सम्मान, मित्रता और सामाजिक समरसता के मूल्यों को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाया जा सके।

त्योहार लोगों को जोड़ें.. संस्कृति समाज को एकसूत्र में बाँधे.. और विविधता हमारी शक्ति बने।

आइए, कामना करें कि ‘अलाय बलाय’ की भावना देश के और अधिक क्षेत्रों तक पहुँचे, लोगों के बीच आत्मीय संबंधों को मजबूत करे और तेलंगाना की समृद्ध संस्कृति को राष्ट्रीय स्तर पर और अधिक पहचान दिलाए।



-कैलास नागेश

संपादकीय

पराली की तपिश

यह विडंबना ही है कि जब देश की राजधानी में प्रदूषण की गंभीरता दिखायी देती है तो देश के नीति-नियंता पराली निस्तारण को लेकर बड़ी-बड़ी बातें करने लगते हैं। अभी कोई अंतिम वैज्ञानिक अध्ययन भी सामने नहीं आया है कि पंजाब या अन्य राज्यों में पराली जलाने से रोकने के लिये पराली निस्तारण के जो भी विकल्प दिए जाते हैं, वे समय के अनुरूप किसान की सुविधा व आर्थिकी के अनुरूप नहीं हैं। यदि ये उपाय कारगर होते तो पराली प्रबंधन पर खर्च किए जाने वाले हजारों करोड़ रुपये पर एक छोटी-सी माचिस भारी न पड़ती। किसान अपने खेतों में पराली को बार-बार यदि आग के हवाले करते हैं तो उसके पीछे का कड़वा सच यह भी है कि धान के अवशेषों को वैज्ञानिक तरीके से नष्ट करने की तुलना में, पराली जला देना उसे सुविधाजनक, सस्ता तात्कालिक निस्तारण का विकल्प नजर आता है। निस्संदेह, जब तक आर्थिक रूप से लाभप्रद विकल्प किसान को नहीं दिया जाता, तब तक केवल सस्बिडी देने या दंडात्मक कार्रवाई करने के बहुत सीमित परिणाम ही सामने आएंगे। सूत्रों के अनुसार पंजाब में 15

सितंबर से 24 अक्तूबर के बीच खेतों में पराली जलाने की 574 घटनाएं दर्ज की गई हैं। यदि पिछले साल के आंकड़ों से इसकी तुलना करें तो इसी अवधि में 561 घटनाएं ही सामने आई थीं। आंकड़े बताते हैं कि इस साल 270 घटनाएं अकेले तरनतारन में और 144 घटनाएं अमृतसर के इलाके में सामने आई हैं। जो बताती हैं कि इन दोनों इलाकों में विशेष रूप से ध्यान देने और पराली जलाने से रोकने के लिये 576 करोड़ रुपये आवंटित किए गए थे। इसके अलावा सस्बिडी वाली लगभग 21, 155 मशीनें उपलब्ध कराई गई थीं। दरअसल, सरकारी आर्थिक मदद के बावजूद किसानों को मशीनों को चलाने के खर्च, धान की कटाई और गेहूं की बुवाई के बीच बहुत कम समय समय मिलने और जरूरत के समय मशीनें न मिल पाने जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उल्लेखनीय है कि वैज्ञानिक तरीके से पराली प्रबंधन करने में प्रति एकड़ दो हजार से लेकर ढाई हजार रुपये तक खर्च आ सकता है। तभी आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहे किसानों को पराली जलाना सबसे आसान विकल्प लगता है। हालांकि, शासन व प्रशासन ने पराली जलाने से रोकने के लिये सख्ती बढ़ा दी है। सूत्रों के अनुसार अब तक पराली जलाने के मामले में 113 प्राथमिकी दर्ज की गई हैं। इसके अलावा जमीन के रिकॉर्ड में 205 रेड एंट्री की गई हैं। साथ ही 11.4 लाख रुपये का पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने का आर्थिक दंड लगाया गया है। निस्संदेह, देश में व्याप्त पर्यावरण संकट के महदेनजर ऐसी कार्रवाई करना भी जरूरी हो जाता है, क्योंकि खेतों में पराली जलाने से समाज को प्रदूषण के रूप में सेहत के लिये भारी कीमत चुकानी पड़ती है। हालांकि, केवल ज़ुर्माना लगाने से व्यावहारिक विकल्पों की कमी पूरी नहीं हो सकती। साथ ही, साफ हवा बनाये रखने की पूरी कीमत अकेले किसानों को ही नहीं चुकानी चाहिए। दरअसल, प्राथमिकता यह रहे कि फसल अवशेषों का प्रबंधन सस्ता और सहज-सुलभ हो। इसके लिये पराली एकत्र करने और उसे ढोने के लिये जरूरी मशीनें यानी बेलर्स को कमी की भी दूर किया जाना चाहिए। किसानों को बायोमास पॉवर प्लांट, ईट-ब्रिक्के और अन्य उद्योगों से जोड़ने वाले भरोसेमंद बाजार उपलब्ध कराकर, कृषि अवशेषों को एक आर्थिक संसाधन में बदला जा सकता है। इसके साथ ही बिना आग लगाए पराली प्रबंधन करने वाले किसानों को प्रोत्साहन देने पर भी विचार किया जाना चाहिए।

सही मायने में सफलता को इस आधार पर मापा जाना चाहिए कि कितने खेतों को बिना जलाये साफ किया गया, न कि इस आधार पर कि कितना पैसा खर्च हुआ। या फिर कितनी मशीनें बांटी गई। इस दिशा में पंजाब में केंद्र सरकार, राज्य सरकार, उद्योगों और किसानों को तालमेल के साथ काम करना चाहिए।

कुछ

अलग

दीवारों का विस्तार

हर दीवार अपने भीतर एक भविष्य की दारार लेकर जन्म लेती है। ‘ मेरा’ शब्द अकेला नहीं आया था। वह अपने साथ अनेक अदृश्य शब्द भी लेकर आया। सीमा। अधिकार। सुरक्षा। रक्षा। और सबसे अंत में- भय। जिस घर को मनुष्य ने अपना कहा, उसकी रक्षा का विचार भी उसी दिन जन्मा। पहले उसने घर के चारों ओर बाड़ बनाई। फिर बाड़ दीवार बनी। दीवार ऊंची हुई। फिर मोटी। फिर उस पर फाटक लगा। फिर पहरा। इतिहासकार लिखते हैं- ‘मनुष्य ने जितनी ऊंची दीवार बनाई, उतना ही गहरा उसका भय हो गया।’ वक्रुति यह सब देखती रही। उसे आपश्चय नहीं हुआ। वह जानती थी- जिसे खोने का डर हो, वह बचाने के उपाय अवश्य खोजेगा। धीरे-धीरे घर बदलने लगे। आश्रय निवास बना। निवास संपत्ति बना। संपत्ति प्रतिष्ठा बनी। और प्रतिष्ठा पहचान। अब घर वर्षा से बचने के लिए नहीं बनते थे। वे दूसरों को प्रभावित करने के लिए भी बनने लगे। किसी का घर बड़ा था।

दृष्टि

कोण

इन

दिनों पत्रकारों के लिए भी यह पता लगाना मुश्किल होता जा रहा है कि कौनसी खबर सही या प्रामाणिक है और कौन फर्जी। कई बार तो सच्ची खबरें ऐसी लाती हैं कि फर्जी हैं जबकि फर्जी खबरें असली लगती हैं। इसका कारण यह है कि वे दिमाग पर तेजी से असर डालती हैं, उनमें चँकाने वाले तत्व होते हैं और वे लिखी भी ग्राह्य ढंग से जाती हैं। ऐसी खबरों के कारण समाचार पत्रों के संपादकों को यह समस्या होती है कि वे उन्हें पहचानें कैसे? कौनसी खबर फर्जी या सच है, यह जानना कठिन हो जाता है। पाठक के लिए तो ये खबरें विलुक्ल प्रामाणिक सी लगती हैं और वे उन पर सहज विश्वास भी कर लेते हैं। ऐसी खबरें काफ़ी समय तक प्रामाणिक या सच बनकर मीडिया के ब्रम्हांड में घूमती रहती हैं और उस विषय से संबंधित सच्ची

खबरों की काफ़ी समय तक उपेक्षा की जाती रहें। ऐसा नहीं है कि यह स्थिति भारत में ही है, बल्कि सारी दुनिया इस बीमारी से जूझ रही है और असल तथा नकल में पहचान करना मुश्किल होता जा रहा है।

इतनी विश्वसनीय ढंग से पेश की जाती हैं कि उन्हें सच्चा मानना ही पड़ता है। इससे समाज को बहुत नुकसान होता है, विश्वसनीयता का संकट खड़ा हो जाता है।

कोरोना काल में हमने देखा कि हजारों समाचार हमारे सामने आ रहे थे और हम जाने-अनजाने में उन पर विश्वास कर रहे थे। अखबारों, टीवी चैनलों, न्यूज वेबसाइटों के लिए बड़ी संकेतपूर्ण स्थिति थी। उस दौरान जब हालात ऐसे नहीं थे कि संवाददाता बाहर निकल कर हमेशा रिपोर्टिंग करे, तो ऐसे में चारों ओर से फर्जी खबरें आ रही थीं। उन्हें प्रमाणित मान लिया

सरकार इन उपलब्धियों को शिक्षा में सुधार का प्रमाण बताती है। लेकिन इस चमकदार तस्वीर के पीछे कुछ ऐसे सवाल भी हैं जिनसे मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। क्या विद्यालयों और महाविद्यालयों में नियमित कक्षाएं चल रही हैं? क्या विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है? क्या शिक्षकों की उपस्थिति और पढ़ाई की वास्तविक स्थिति में कोई संबंध है? और क्या परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना वास्तव में ज्ञान और समझ का प्रमाण है? इन सवालों के बीच खाली कक्षाओं, उपस्थिति के अंकड़ों में संभावित गड़बड़ियों और शिक्षण की कमजोर होती गुणवत्ता पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है।

शिक्षा के विस्तार के लिए पिछले वर्षों में कई योजनाएं शुरू की गई हैं। विद्यालयों में आधारभूत सुविधाएं बढ़ाने, शिक्षकों की नियुक्ति करने, छात्रवृत्ति देने और विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के प्रयास हुए हैं। इन पहलों का महत्व है, लेकिन इनकी सफलता का आकलन केवल बजट खर्च, नियुक्तियों और परीक्षा परिणामों से नहीं किया जा सकता। यह देखना भी जरूरी है कि शिक्षा में वास्तव में क्या हो रहा है और विद्यार्थी कितना सीख रहे हैं। उपस्थिति का हिसाब रखना प्रशासनिक जरूरत है, लेकिन उपस्थिति को ही शिक्षा मान लेना बड़ी भूल है। किसी विद्यालय में शिक्षक की हाजिरी नियमित हो, विद्यार्थी भी नामांकित हों, फिर भी यदि कक्षा में पढ़ाई नहीं हो रही, तो व्यवस्था अपने मूल उद्देश्य से घटक रही है। इसी तरह, कागजों पर उपस्थिति पूरी दिखने और वास्तविक स्थिति में अंतर होने की शिकायतें सामने आती हैं, तो उनकी निष्पक्ष जांच आवश्यक है।

देश	दुनिया से

वह लकीर जिसने मुझे हरियाणवी बनाया

मैं तीन साल का था, जब भारत के नक्शे पर एक नई, टेढ़ी-मेढ़ी लकीर खींची गई। तीन साल, दो महीने और एक दिन—ठीक वैसे ही जैसे बच्चे अपनी उम्र गिनते हैं, वह जानते हुए कि हम बड़े होकर भूल जाते हैं कि हर एक दिन मायने रखता है। और उन दिन ने सच में मायने रखा। 1 नवंबर 19६6 को, मेरे माता-पिता ने खुशी-खुशी मुझे बताया कि अब हम हरियाणवी हैं। मैंने इसे ऐसे लिया जैसे कोई बच्चा एक तोहफा पाकर करता है। बहुत बाद में मुझे समझ आया—इसे बनाने में मेरे माता-पिता ने यह कार्के अपना योगदान दिया। हरियाणा दिवस और पंजाब दिवस एक ही तारीख को आते हैं, जैसे मायने-आग घरों में पले-बढ़े जुड़वाँ बच्चे। हर हरियाणवी पंजाब की खबरें ऐसे पढ़ता है जैसे कोई अपने बड़े भाई की खबरें पढ़ रहा हो—जन्मजात स्नेह के साथ, थोड़ी-सी टीस के साथ और मन ही मन महसूस होने वाले थोड़े से गर्व के साथ। हां, गर्व, क्योंकि किसी को उम्मीद नहीं थी कि छोटा भाई (हरियाणा) अपने पैरों पर खड़ा हो पाएगा। हरियाणा उस समय एक शुष्क और धूल भरा इलाका था—जिसे कमतर माना जाता था, जहां न के बराबर उद्योग-धंधे, सड़कें थीं और नहरें भी नहीं थीं, और न ही पैसा था। कहा गया था कि कुछ ही सालों में यह राज्य असफल होकर रह जाएगा, कर्मचारियों को वेतन तक नहीं दे पाएगा। यह लकीर 1९61 की जगणगण आधारित थी। इसी जगणगण के आंकड़ों से यह तय होना था कि पूर्वी पंजाब के मैदानी इलाकों में हर गांव और शहर का भविष्य का पता क्या होगा। जब जनगणना करने वाले अधिकारी आए तो मेरे माता-पिता—जो कि पश्चिम पंजाब से आकर यहां बसे थे—ने अपनी मातृभाषा ‘हिंदी’ बताई। यह प्यार से बोला



गया झूठ था; एक ऐसे राज्य के लिए दिया गया वोट, जिसका उस समय कोई अस्तित्व ही नहीं था। जब हरियाणा बना, तब मैंने अंबाला शहर के एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाई शुरू की थी, जहां हर कोई पंजाबी बोलता था। कुछ ही समय बाद, हिंदी में किताबें आ गई—एक ऐसी भाषा जिसे मेरे शिक्षकों और मैंने एक साथ मिलकर सीखा। बाद में, कॉलेज में पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी हो गया। कई सालों तक, किसी भी सवाल का जवाब देने के लिए मुझे दिमाग में तीन कदम उठाने पड़ते थे—पहले पंजाबी में सोचना, उसका हिंदी में अनुवाद, और अंत में अंग्रेजी में लिखना। और फिर भी, परीक्षा के लिए समय सिर्फ तीन घंटे ही मिलता था। इस बीच, मेरे पिता अपना उर्दू दैनिक अखबार ‘हिंदू समाचार’ पढ़ते रहे, सेना में बतौर सैनिक भर्ती होकर वे तरक़ी पाकर नायब सुबेदार के पद तक पहुंचे थे। मेरी मां अपने दो बेटों की परवरिश के दौरान संस्कृत के ग्रंथों का पाठ करती थीं। इस तरह, मैं चार लिपियों और पांच भाषाओं—और उनके साहित्य—के बीच पढ़ा-बढ़ा। कोई महत में न होने के कारण, मैं अपनी मां के रोज़मर्रा

के कामों में हाथ बंटाने लगा और वहीं से मैंने एक बहुत ही कीमती गुण सीखा—कोमलता। हम लोग गरीब थे, और उस समय हरियाणा भी गरीब था। मार्च 1977 में, जब मैं 13 साल का था और अभी मैट्रिक रह सकी। मैं भाग्यशाली रहा कि मुझे बंसीलाल और ओम प्रकाश चौटाला के कार्यकाल में ‘निदेशक जनसंपर्क’ के रूप में काम करने का मौका मिला। आगे चलकर, मैं ओम प्रकाश चौटाला, मनोहर लाल और नायब सिंह सेनी के कार्यालयों में और भी गहराई से जुड़ा रहा। उन वर्षों ने मुझे एक बहुत महत्वपूर्ण सबक सिखाया—‘सीजर को पत्नी’ वाला सिद्धांत। सरकार के फैसले न केवल लोगों के लिए अच्छे होने चाहिए, बल्कि वे अच्छे दिखने भी चाहिए। फरीदाबाद और गुरुग्राम (तब गुडगांव) नगर निगमों में बतौर कमिश्नर बित्ताए चार सालों ने मुझे चीजों को उच्चतर पर देखने में और ज़मीनी हकीकत के बीच रहने वाले अंतरों को बहुत करीब से दिखाया। वर्ष 2025-2६ में, हरियाणा की प्रति व्यक्ति आब लगभग 3.96 लाख रुपये हैं, जबकि पंजाब की लगभग 2.31 लाख रुपये हैं।

अच्छे परिणामों के बावजूद शिक्षा व्यवस्था की सफलता पर सवाल उठेंगे

खाली कक्षाएं, फर्जी हाजिरी और अक्ल नतीजे

बिहार

की शिक्षा व्यवस्था को लेकर समय-समय पर अच्छे परीक्षा परिणामों, विद्यार्थियों की उपलब्धियों और सरकारी योजनाओं की चर्चा होती है। सरकार इन उपलब्धियों को शिक्षा में सुधार का प्रमाण बताती है। लेकिन इस चमकदार तस्वीर के पीछे कुछ ऐसे सवाल भी हैं जिनसे मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। क्या विद्यालयों और महाविद्यालयों में नियमित कक्षाएं चल रही हैं? क्या विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है? क्या शिक्षकों की उपस्थिति और पढ़ाई की वास्तविक स्थिति में कोई संबंध है? और क्या परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना वास्तव में ज्ञान और समझ का प्रमाण है? इन सवालों के बीच खाली कक्षाओं, उपस्थिति के अंकड़ों में संभावित गड़बड़ियों और शिक्षण की कमजोर होती गुणवत्ता पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। शिक्षा केवल नामांकन, उपस्थिति और परीक्षा परिणामों का सरकारी आंकड़ा नहीं है। उसका वास्तविक उद्देश्य विद्यार्थियों में ज्ञान, विवेक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, रचनात्मकता और सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करना है।



हालांकि, किसी शिकायत को जांच के बिना पूरे शिक्षक समुदाय पर आरोप बनाने का आधार नहीं बनाया जाना चाहिए। डिजिटल उपस्थिति जैसी अधिकतम समय शिक्षण, पाठ-योजना, विद्यार्थियों उनसे यह पता लगाया जा सकता है कि शिक्षक और विद्यार्थी निर्धारित समय पर संस्थान पहुंच रहे हैं या नहीं। लेकिन तकनीक अपने आप शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित नहीं करती। उपस्थिति दर्ज हो जाने के बाद भी यह प्रश्न बना रहता है कि शिक्षक ने कितना पढ़ाया, विद्यार्थी ने कितना समझा और सीखने में पिछड़ रहे बच्चों की मदद कैसे की गई। यदि प्रशासन का पूरा ध्यान हाजिरी दर्ज कराने पर केंद्रित हो जाए, तो शिक्षक की भूमिका पढ़ाने के बजाय आंकड़े पूरे करने तक सीमित होने का खतरा है। निगरानी का उद्देश्य भय पैदा करना नहीं, बल्कि शिक्षण को बेहतर बनाना होना चाहिए। शिक्षक की जवाबदेही आवश्यक है, लेकिन उसके साथ पर्याप्त संसाधन, शैक्षणिक सहयोग और सम्मानजनक कार्य वातावरण भी जरूरी हैं। बिहार की शिक्षा व्यवस्था की एक बड़ी चुनौती है, फिर भी यदि कक्षा में पढ़ाई नहीं हो रही, तो व्यवस्था अपने मूल उद्देश्य से घटक रही है। इसी तरह, कागजों पर उपस्थिति पूरी दिखने और वास्तविक स्थिति में अंतर होने की शिकायतें सामने आती हैं, तो उनकी निष्पक्ष जांच आवश्यक है।

बतौर एसडीएम शुरुआत की थी और रोहतक तक चला, जहां पर एक दशक बाद मैं उप आयुक्त रहा। हर दिन मुझे दूसरों की मदद करने, लोगों का दुख कम करने, समस्याएं सुलझाने और वहां की स्थानीय बोली सीखने के मौके मिलते थे। राज्य मुख्यालय में काम करते हुए मैंने दूसरा पहलू सीखा: एक राज्य का निर्माण फाइल-दर-फाइल प्रक्रिया से गुजरकर होता है, उन विचारों से जिन्हें ऐसे लोगों ने लिखा और हस्ताक्षर किया होता है, जिनको पढ़ें के पीछे रहकर काम करने को तैयार किया जाता है। ऐसा ही एक विचार 1९94 में आया—

‘अपनी बेटी, अपना धन’—जिसके तहत हर नवजात बच्चे के नाम पर सरकार की ओर से एक छोटा बजट निवेश किया जाए। इस विचार की जड़ मेरी इकतीनी बहन से जुड़ी थी, जो मुझसे पहले पैदा हुई थी, लेकिन कुछ महीनों से ज़्यादा जीवित नहीं रह सकी। मैं भाग्यशाली रहा कि मुझे बंसीलाल और ओम प्रकाश चौटाला के कार्यकाल में ‘निदेशक जनसंपर्क’ के रूप में काम करने का मौका मिला। आगे चलकर, मैं ओम प्रकाश चौटाला, मनोहर लाल और नायब सिंह सेनी के कार्यालयों में और भी गहराई से जुड़ा रहा। उन वर्षों ने मुझे एक बहुत महत्वपूर्ण सबक सिखाया—‘सीजर को पत्नी’ वाला सिद्धांत। सरकार के फैसले न केवल लोगों के लिए अच्छे होने चाहिए, बल्कि वे अच्छे दिखने भी चाहिए। फरीदाबाद और गुरुग्राम (तब गुडगांव) नगर निगमों में बतौर कमिश्नर बित्ताए चार सालों ने मुझे चीजों को उच्चतर पर देखने में और ज़मीनी हकीकत के बीच रहने वाले अंतरों को बहुत करीब से दिखाया। वर्ष 2025-2६ में, हरियाणा की प्रति व्यक्ति आब लगभग 3.96 लाख रुपये हैं, जबकि पंजाब की लगभग 2.31 लाख रुपये हैं।

कांग्रेस

अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने एक जनसभा के मंच से लगभग चीखते हुए कहा- ‘मोदी तो क्या, मोदी का बाप भी जाएगा।’ साफ है कि प्रधानमंत्री मोदी को गाली दी गई है। प्रधानमंत्री के ‘दिवंगत’ माता-पिता को अपशब्दों और उपहास का पात्र बनाया जाता रहा है। यह कौन-सी राजनीतिक मर्यादा और नैतिकता है? खडगे और उनकी पार्टी प्रधानमंत्री मोदी की धुर विरोधी है और उन्हें सत्ता से बाहर करने पर आमादा और आंदोलित है, लेकिन प्रधानमंत्री के मां-बाप का भी अपना सम्मान है। परिवार का सम्मान है।

किसी को भी गाली देकर राजनीतिक लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सकते। सत्ता पर किसी का भी पुश्तैनी अधिकार नहीं है। जो जनादेश है, उसी के मुताबिक सत्ता भी तय होती है। कांग्रेस को भी यह लोकतांत्रिक यथार्थ स्वीकार करना पड़ेगा। हमारी संस्कृति में ‘दिवंगत’ दुश्मन के लिए भी अपशब्दों का इस्तेमाल नहीं मर्यादा और नैतिकता है? खडगे और उनकी पार्टी प्रधानमंत्री मोदी की धुर विरोधी है और उन्हें सत्ता से बाहर करने पर आमादा और आंदोलित है, लेकिन प्रधानमंत्री के मां-बाप का भी अपना सम्मान है। परिवार का सम्मान है। किसी को भी गाली देकर राजनीतिक लक्ष्य हासिल नहीं किए जा सकते। सत्ता पर किसी का भी पुश्तैनी अधिकार नहीं है। जो जनादेश है, उसी के मुताबिक सत्ता भी तय होती है। कांग्रेस को भी यह लोकतांत्रिक यथार्थ स्वीकार करना पड़ेगा। हमारी संस्कृति में ‘दिवंगत’ दुश्मन के लिए भी अपशब्दों का इस्तेमाल नहीं किया जाता। कमोबेश 85 वर्षीय खडगे! इस सांस्कृतिक मर्यादा और चरित्र को जानते होंगे! वह अव्यक्त के योग्य नहीं रहे। जनसभा में से एक व्यक्ति ने कहा था कि जब तक विद्रोह नहीं होगा, तब तक मोदी जाने वाले नहीं हैं। इस पर खडगे उत्तेजित क्यों हो गए? प्रधानमंत्री के पिता का गोली क्यों दे दी? सीधा-सा सवाल है। दुश्मन के लिए भी अपशब्दों का इस्तेमाल नहीं किया जाता। कमोबेश 85 वर्षीय खडगे! इस सांस्कृतिक मर्यादा और चरित्र को जानते होंगे! वह अव्यक्त का मानसिक संतुलन कैसे बिगड़ सकता है? यदि वह एक आम कार्यकर्ता या सांप, बिच्चू, बंदर, अनपढ़, चायवाला आदि अपशब्दों से अपमानित करने की कोशिशें की थीं। उनकी गरीबी का मजाक उड़ाया था। मोदी को ‘मौत का सौभाग्य’ तक सॉनिया गांधी ने कहा था। गुजरात में 1995 के बाद कांग्रेस पट त्याग कर ‘राजनीतिक संन्यास’ ले विधानसभा और लोकसभा चुनावों में लगातार लेना चाहिए। कमोबेश वह सार्वजनिक ‘पराजित पार्टी’ रही है। कांग्रेस प्रवक्ता एवं जीवन के योग्य नहीं रहे। जनसभा में से एक व्यक्ति ने कहा था कि जब तक विद्रोह नहीं होगा, तब तक मोदी जाने वाले नहीं हैं। इस पर खडगे उत्तेजित क्यों हो गए? कांग्रेस अब बदले की राजनीति करेगी और उसी प्रधानमंत्री के पिता को गाली क्यों दे दी? के सहाय सत्ता हासिल करेगी? कांग्रेस ही इस सीधा—सा सवाल है। खडगे ने गुजरात सवाल का जवाब दे सकती है अथवा आत्मचिंतन कर सकती है, लेकिन हम स्पष्ट करना चाहते हैं कि मोदी ने वे शब्द तब कहे हैं, जब वह प्रधानमंत्री नहीं थे, बल्कि संसदीय विधानसभा के सांसद थे। हम मोदी के अपशब्दों की भी भत्सना करते हैं, उन्हें खारिज करते हैं। राजनीति में एक भी अपशब्द की गुंजाइश नहीं है। वह वैचारिक और राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता है, कट्टर दुश्मनी नहीं है, क्योंकि सदन में साथ-साथ बैठ कर देश और राष्ट्र के विकास का काम करना है। मोदी द्वारा बोले गए शब्द भी लोकतंत्र पर ध्वजों की तरह चिपक गए हैं। अब गौरतलब यह है कि कांग्रेस 1 नवंबर को दिल्ली के ‘रामलीला मैदान’ में रैली करने पर आमादा है। पार्टी 10 लाख लोगों की भीड़ की हुंकार पर रही है। मैदान की क्षमता 58-60,000 लोगों की है। वहां 1 लाख तक की भीड़ ठूँसी जा सकती है।





लाहौर। विकेटकीपर बल्लेबाज मुनीबा अली नवंबर में संयुक्त अरब अमीरात के अजमान में होने वाली आईसीसी महिला इंग्लैंड नेशनल ट्राफी में पाकिस्तान की कप्तानी करेंगी। फिफ्टिम ससान फातिमा इसकी अनुपस्थिति में मुनीबा को यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। फातिमा महिला बिग बैंग लीग में थर्ड स्टाफर्स के लिए खेलने की प्रतिवद्धता के कारण इस टूर्नामेंट में हिस्सा नहीं लेंगी। इस साल दूसरी बार मुनीबा को फातिमा की जगह पाकिस्तान की कप्तानी करने का मौका मिला है। इससे पहले उन्होंने जुलाई में श्रीलंका के दूर पर टी-20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला में टीम की अनुआई की थी। उस समय फातिमा इंग्लैंड की द हर्डेड प्रतियोगिता में बर्मिंघम फीनिक्स की ओर से खेल रही थी। व्यक्तित्व कारणों से एशियाई खेलों में हिस्सा नहीं लेने वाली मुनीबा इस टूर्नामेंट के जरिए वापसी करेंगी। बल्लेबाज आयशा जाफर को टीम का उपकप्तान बनाया गया है। एशियाई खेलों में शामिल रही आलराउंडर आलिया रियाज और तेज गेंदबाज हुमा बिलाल को टीम में जगह नहीं मिली है। फातिमा की अनुपस्थिति को छोड़ दे, तो 14 सदस्यीय टीम लगभग वही है, जिसने एशियाई खेलों से पहले महिला एशिया कप में हिस्सा लिया था।

BOOK YOUR DISPLAY CLASSIFIED ADVERTISEMENTS AT

Timings : 9 am to 7 pm

Head office

SHREE SIDDHIVINAYAK PUBLICATIONS,

Plot No. A-23/5 & 6 2nd Floor,

APIE, Balanagar, Hyderabad - 500 037

City office

SHREE SIDDHIVINAYAK PUBLICATIONS,

Plot No. A-23/5 & 6 2nd Floor,

APIE, Balanagar,

Hyderabad - 500 037

8688868345

शुभ लाभ

महारे

भाग्यनगर

दैनिक हिन्दी शुभ लाभ, हैदराबाद, बुधवार, 28 अक्टूबर, 2026

शुभ लाभ

आपकी सेवा में

शुभ लाभ से जुड़ी किसी भी समस्या या सुझाव के लिए

मो. 86888 68345 पर संपर्क करें।

प्लांट रिक्टर्स से निकल और कोबाल्ट की रिकवरी के लिए मिधानि का भारी पानी बोर्ड और भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

हैदराबाद, 27 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। संसाधन रिकवरी, टिकाऊ विनिर्माण और सर्कुलर इकोनॉमी को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, रक्षा मंत्रालय के अधीन मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि), हैदराबाद, परमाणु ऊर्जा विभाग के अधीन भारी पानी बोर्ड और भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई, ने 27 अक्टूबर 2026 को प्लांट रिक्टर्स से कोबाल्ट और निकल के उत्पादन और रिकवरी पर सहयोग करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

यह समझौता ज्ञापन तीनों संगठनों के बीच सहयोग के लिए एक ढांचा स्थापित करता है। इसके तहत प्लांट रिक्टर्स से मूल्यवान धातुओं को निकालने के लिए कुशल प्रक्रियाओं का पता लगाने और उन्हें लागू करने के लिए उनकी विशेषज्ञता, तकनीकी क्षमताओं तथा औद्योगिक संसाधनों का लाभ उठाया जाएगा। इस पहल का उद्देश्य संसाधनों के उपयोग को अधिकतम करना,



प्राथमिक खनिज संसाधनों पर निर्भरता को कम करना और पर्यावरण के अनुकूल धातु उत्पादन को बढ़ावा देना है। कोबाल्ट और निकल महत्वपूर्ण धातुएं हैं जिन्हें जिनका उपयोग उन्नत बैटरी तकनीकों, इलेक्ट्रिक वाहनों, स्टेनलेस स्टील, सुपरअलॉय और अन्य रणनीतिक औद्योगिक अनुप्रयोगों में बड़े पैमाने पर किया जाता है। प्लांट रिक्टर्स से इन धातुओं को निकालने से घरेलू आपूर्ति शृंखला को मजबूत करने, संसाधन दक्षता में सुधार करने और महत्वपूर्ण धातुओं की बढ़ती मांग को पूरा करने में काफी मदद मिल सकती है। द्वितीयक स्रोतों

से कोबाल्ट और निकल की रिकवरी करके, यह सहयोग प्लांट रिक्टर्स से मूल्य प्राप्त करना चाहता है जो अन्यथा कम उपयोग में रह जाते और महत्वपूर्ण धातुओं की अधिक लचीली और टिकाऊ आपूर्ति में योगदान देते। इस अवसर पर बोलते हुए, मिधानि के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक डॉ. एस वी एस नारायण मूर्ति ने कहा, “इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर द्वितीयक संसाधनों से महत्वपूर्ण धातुओं की रिकवरी को बढ़ावा देने के हमारे प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इस सहयोग के माध्यम से, हमारा लक्ष्य अपनी ताकतों को मिलाना और प्लांट

रिक्टर्स से कोबाल्ट और निकल के उत्पादन के लिए व्यवहार्य, टिकाऊ और व्यावसायिक रूप से प्रतिस्पर्धी समाधान विकसित करना है।” समझौता ज्ञापन पर डॉ. एस वी एस नारायण मूर्ति, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि, श्री वी.वी.एस.ए. प्रसाद, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी भारी पानी बोर्ड और डॉ. आलोक अवस्थी, एसोसिएट डायरेक्टर, मटेरियल ग्रुप, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र ने हस्ताक्षर किए। इस कार्यक्रम में मिधानि की निदेशक (वित्त) शीमती के. मधुबाला और भारी पानी बोर्ड के कार्यकारी निदेशक श्री संदीप वाधवा भी शामिल हुए। इन तीनों संगठनों ने विश्वास व्यक्त किया कि यह सहयोग धातु रिकवरी और रीसाइक्लिंग में नए अवसर पैदा करेगा, सर्कुलर इकोनॉमी का समर्थन करेगा, और भारत के बढ़ते औद्योगिक और स्वच्छ-ऊर्जा क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण कच्चे माल की दीर्घकालिक उपलब्धता में योगदान देगा।



अग्र महिला मंच ने मनाया करवा चौथ एवं शरद पूर्णिमा उत्सव



हैदराबाद, 27 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। अग्र महिला मंच तेलंगाना की ओर से करवा चौथ पर्व एवं शरद पूर्णिमा रासलीला उत्सव राखव रत्ना टावरस के दसवें माले स्थित श्री अग्रसेन हॉल में भव्य रूप से आयोजित किया गया। उत्सव में लगभग 70 महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रेस विज्ञप्ति में मंच की अध्यक्षा दीपा गर्ग ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ समय पर पहुंचने वाली सदस्यों के लिए आयोजित मनोरंजक खेल प्रतियोगिताओं से हुआ। उत्सव का मुख्य आकर्षण कार्यक्रम कार्यकारी सदस्यों द्वारा प्रस्तुत करवा चौथ पर आधारित लघु नाटिका रही, जिसमें विभिन्न जोड़ियों ने अपने अनूठे अंदाज में मनमोहक प्रस्तुतियां दीं। उपस्थित सदस्यों ने इनका भरपूर आनंद लिया।

मंजू केजरीवाल एवं संगीता देवड़ा ने पारंपरिक राजस्थानी वेशभूषा में करवा चौथ की पूजा

का सुंदर चित्रण किया। प्रभावती अग्रवाल, अर्चना अग्रवाल एवं सरला अग्रवाल ने ‘पति, पत्नी और वो’ की भूमिका निभाई। चंचल अग्रवाल एवं सीमा गर्ग ने पंजाबी जोड़ी के रूप में अपनी प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया। मधु गोयल एवं सपना अग्रवाल ने मारवाड़ी वेशभूषा में पारंपरिक करवा चौथ प्रस्तुत की, जबकि दीपा गर्ग एवं अंजू गोयल ने आधुनिक विदेशी पति-पत्नी की भूमिका निभाकर कार्यक्रम में मनोरंजन का रंग भर दिया।

इन सभी प्रस्तुतियों एवं प्रतियोगिताओं का निर्णयन प्रेमलता गोयल एवं कौशल्या सोनी ने किया। महिलाओं के लिए अर्ली बर्ड, करवा चौथ थाली सजावट, रेडो बॉलीवुड जोड़ी, राधा-कृष्ण रास नृत्य जोड़ी तथा विभिन्न मनोरंजक खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन्हें रूपा अग्रवाल, ज्योति अग्रवाल, रेनू अग्रवाल,

अनीता अग्रवाल, संतोष गोयनका, नीता अग्रवाल, सुमन चैनवाला, मधु अग्रवाल, धनवंती अग्रवाल, सिंपल अग्रवाल, दीपम अग्रवाल एवं ताव्या गर्ग को पुरस्कृत किया गया। निर्णायकगण को मंच के पदाधिकारियों ने उपहार हैंपर एवं दुपट्टे भेंट कर सम्मानित किया। सभी विजेताओं को दीपा गर्ग, अंजू गोयल एवं अर्चना अग्रवाल के सौजन्य से पुरस्कार प्रदान किए गए।

कार्यक्रम के पंजीकरण का दायित्व सरला जिंदल एवं संगीता देवड़ा ने संभाला। फोटोग्राफी सिंपल अग्रवाल, दीपम एवं ताव्या ने की। मनोरंजक तंबोला अंजू गोयल एवं दीपा गर्ग ने खिलाया, जबकि मंच संचालन मधु गोयल ने कुशलतापूर्वक किया। कार्यक्रम के अंतिम चरण में सभी महिलाओं ने उत्साहपूर्वक रासलीला नृत्य में भाग लिया, जिससे उत्सव और भी यादगार

बन गया। कार्यक्रम के बाद सभी के लिए अल्पाहार एवं चाय की व्यवस्था मंजू गुप्ता के नेतृत्व में की गई। अंत में मीना कुंछल ने उपस्थित सदस्यों एवं सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया और सभी को शुभकामनाएं दीं। उत्सव उल्लास, पारंपरिक संस्कृति और आपसी सौहार्द के वातावरण में संपन्न हुआ।

केटी रामा राव ने जल प्रबंधन पर उठाए सवाल, किसानों को पानी, बिजली और यूरिया की कमी का आरोप

हैदराबाद, 27 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। तेलंगाना में भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के कार्यकारी अध्यक्ष के.टी. रामा राव ने कांग्रेस सरकार पर जल संसाधनों के कुप्रबंधन और राज्य में सूखे जैसे हालात के लिए जिम्मेदार होने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि किसान सिंचाई के पानी, बिजली और यूरिया की कमी से जूझ रहे हैं। मंगलवार को तेलंगाना भवन में निर्मल विधानसभा क्षेत्र के कई कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेताओं के बीआरएस में शामिल होने के अवसर पर के.टी. रामा राव ने दावा किया कि गोदावरी और कृष्णा नदियों का पानी सिंचाई के काम आने के बजाय समुद्र में बह रहा है। उन्होंने राज्य सरकार के जल प्रबंधन पर सवाल उठाते हुए किसानों की समस्याओं का मुद्दा उठाया।



ऊपर उठकर दूसरों के सुख-दुख को समझता है, तभी समाज में आपसी विश्वास, प्रेम और सहयोग की भावना विकसित होती है। अन्नसेवा ऐसा पुनीत कार्य है, जो सेवा करने वाले और सेवा प्राप्त करने वाले, दोनों के मन में आत्मीयता का भाव जगाता है। उन्होंने कहा कि राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद नियमित सेवा गतिविधियों के माध्यम से समाज में परोपकार और मानवीय मूल्यों

को प्रोत्साहित करने का प्रयास कर रहा है। इस अभियान की मूल भावना यही है कि कोई भी जरूरतमंद स्वयं को अकेला या उपेक्षित महसूस न करे। समाज के प्रत्येक समर्थ व्यक्ति को आगे आकर अपनी सामर्थ्य के अनुसार सेवा कार्यों में योगदान देना चाहिए। छोटे-छोटे सहयोग भी मिलकर बड़े सामाजिक परिवर्तन का आधार बन सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि भगवान

की भक्ति का वास्तविक स्वरूप मानवता की सेवा में भी दिखाई देता है। पूजा-पाठ के साथ-साथ पीड़ित, असहाय और जरूरतमंद लोगों के प्रति करुणा रखना भी हमारे संस्कारों का अभिन्न अंग है। सेवा को केवल एक दिन का कार्य न मानकर जीवन का संस्कार बनाना चाहिए, ताकि समाज में सहयोग और संवेद-नशीलता की परंपरा निरंतर आगे बढ़ती रहे। कार्यक्रम में राम प्रकाश अग्रवाल, सुनीता अग्रवाल, महेश अग्रवाल, भगत राम गोयल, मनीष अग्रवाल, भाकराम कुमावत, कमला देवी, रोहित अग्रवाल, सुमन अग्रवाल, संजय गोयल, किरण गोयल एवं प्रतीका अग्रवाल सहित राधे-राधे ग्रुप के अन्य सदस्यों ने सहभागिता निभाई।



आगामी 11 दिसंबर को आयोजित होने वाले भव्य गौ सम्मान आह्वान अभियान की जानकारी श्रीश्रीश्री रामानुज चिन्ना जीवर स्वामी, देवनागर जीवर स्वामी, अहोबिलम जीवर स्वामी एवं आनंदमूर्ति गुरु माँ को दी गई। इस अवसर पर अभियान में भाग लेने एवं सहयोग करने का निवेदन किया गया। इस दौरान अभियान के संयोजक स्वामी सनकादीकदास महाराज, डॉ. अमित आचार्य, श्री राधे महाराज, जसमंत पटेल, गोपाल सारडा, बन्नी विशाल लोया एवं अन्य उपस्थित रहे।



श्री भाग्यलक्ष्मी मंदिर, चारमीनार, हैदराबाद की ओर से हैदराबाद पुलिस आयुक्त वी.सी. सज्जनार (आईपीएस) एवं तेलंगाना सरकार के राज्य सुरक्षा सलाहकार (एसएसए) बी. शिवधर रेड्डी को सादर आमंत्रण प्रदान किया गया।



बागलिंगमपल्ली स्थित सुदीया विज्ञान केंद्र में राज्य आर्य कटिका अभिवृद्धि संगम के राज्य अध्यक्ष भूमपल्ली जी. अशोक दादा ने कोयलकर दौके दिनेश को महासचिव पद पर नियुक्त किया। साथ ही वनजा को राज्य महिला अध्यक्ष तथा अन्य पदाधिकारियों को उपाध्यक्ष एवं महासचिव पदों से संबंधित जिम्मेदारियां सौंपी गईं। इस अवसर पर संगम के सभी सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने समाज को एकजुट होकर विकास की दिशा में आगे ले जाने की शपथ ली।

हाईलाइफ प्रदर्शनी का भव्य शुभारंभ फैशन, आभूषण और लाइफस्टाइल के आकर्षक संग्रह से सजा उत्सवी बाजार

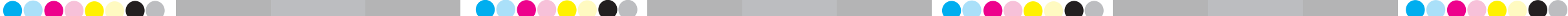


हैदराबाद, 27 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। देश के सबसे बड़े फैशन एवं लाइफस्टाइल प्रदर्शनी ब्रांडों में शामिल हाईलाइफ एग्जिबिशन ने उत्सव सीजन विशेष प्रदर्शनी का शुभारंभ किया। यह प्रदर्शनी 29 अक्टूबर 2026 तक हैदराबाद

के हाईटेक सिटी स्थित एचआईसीसी, नोवोटेल में आयोजित की जा रही है। इसमें डिजाइनर परिधान, उत्सवी परिधान, फैशन वियर, आभूषण, लाइफस्टाइल उत्पाद और अन्य आकर्षक वस्तुओं का संग्रह प्रदर्शित किया जा रहा है।

प्रदर्शनी के भव्य शुभारंभ समारोह में अभिनेत्री दक्ष नागरकर, अभिनेत्री चांदनी भगवानानी, अभिनेत्री प्रीति सुंदर, मिस सुप्राणेशनल एशिया-2023 प्रगत्या अय्यागरी सहित अनेक फैशन प्रेमियों और सेलिब्रिटीज ने भाग लिया। इस अवसर पर हाईलाइफ एग्जिबिशन के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी (एमडी एवं सीईओ) एबी पी. डोमिनिक ने कहा कि हाईलाइफ एग्जिबिशन उत्सवी, लाइफस्टाइल और विवाह की खरीदारी के लिए सबसे प्रसिद्ध, लोकप्रिय और देश के प्रमुख प्रदर्शनी ब्रांडों में से एक है। हैदराबाद में 29 अक्टूबर 2026 तक आयोजित यह विशेष उत्सवी प्रदर्शनी ग्राहकों के लिए एक खास अनुभव लेकर आई है। उन्होंने बताया कि प्रदर्शनी में उत्सवी परिधान, डिजाइनर वियर, नवीनतम फैशन, डिजाइनर विशेष संग्रह, साड़ियां, दुल्हन

के परिधान, विवाह के परिधान, फैशन एक्सेसरीज, आभूषण और कई अन्य उत्पादों का विशेष संग्रह उपलब्ध है। हाईलाइफ एग्जिबिशन उत्सवी सीजन के अवसर पर हैदराबाद में रचनात्मक फैशन परिधान, लाइफस्टाइल वियर, ब्राइडल वियर, डिजाइनर परिधान, एक्सेसरीज, आभूषण और अन्य उत्पादों की आकर्षक रेंज प्रस्तुत कर रही है। हाईलाइफ एग्जिबिशन देश की अपनी तरह की सबसे बड़ी फैशन एवं लाइफस्टाइल प्रदर्शिनियों में से एक है। इसमें शीर्ष फैशन ब्रांडों, प्रमुख डिजाइनरों और कलात्मक संग्रहों की भागीदारी इसे खरीदारी के शौकीनों के लिए खास बनाती है। प्रदर्शनी में फैशन एवं लाइफस्टाइल परिधान, विवाह के परिधान, फैशन वियर, डिजाइनर वियर, आभूषण और विभिन्न प्रकार की एक्सेसरीज सहित अनेक उत्पाद प्रदर्शित किए जा रहे हैं।



तेलंगाना के 365 मंडलों में सूखे की मार

31 जिलों के 58.7 प्रतिशत मंडल प्रभावित, हैदराबाद और पेद्दापल्ली को छोड़ बाकी जिलों में सूखे का असर

हैदराबाद, 27 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। तेलंगाना आधिकारिक रूप से सूखे की चपेट में आ गया है और राज्य का आधे से अधिक हिस्सा इससे प्रभावित है। राज्य में केवल दो जिले हैदराबाद और पेद्दापल्ली सूखे के प्रभाव से बचे हैं। इस वर्ष दक्षिण-पश्चिम मानसून पर अल नीनो के प्रभाव के कारण राज्य में सूखे की स्थिति उत्पन्न हुई है।

राज्य सरकार ने मंगलवार को आधिकारिक रूप से 365 मंडलों को सूखाग्रस्त घोषित किया। यह संख्या राज्य के कुल 621 मंडलों का 58.7 प्रतिशत है। प्रभावित मंडल 31 जिलों में फैले हुए हैं। सरकार ने सूखे से निपटने के लिए निर्धारित प्रोटोकॉल लागू करते हुए विभिन्न विभागों को राहत और सूखा प्रबंधन गतिविधियों में शामिल करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

सरकार के अनुसार, 31 जिलों के 365 प्रभावित मंडलों में से 111 में गंभीर सूखा और 254 में मध्यम स्तर का सूखा है। यह घोषणा खरीफ फसल मौसम के संबंध में की गई है, जो अब लगभग समाप्त होने वाला है।

शहरी क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति पर विशेष ध्यान
सूखे की घोषणा मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों पर केंद्रित है। मुख्य सचिव संजय जाजू द्वारा जारी सरकारी आदेशों के अनुसार, संबंधित जिला कलेक्टर प्रत्येक प्रभावित मंडल के लिए सूखे की आधिकारिक अधिसूचना जारी करते समय अधिसूचित नगरपालिका अथवा शहरी क्षेत्रों को उसमें शामिल नहीं करेंगे।

हालांकि, सरकार ने स्पष्ट किया है कि इन शहरी क्षेत्रों को भी सूखा प्रभावित माना जाएगा, लेकिन वहां सूखे का प्रभाव केवल पेयजल आपूर्ति के संदर्भ में लागू होगा।

सूखे की घोषणा सभी मंडलों में बहु-मापदंडीय वैज्ञानिक आकलन के बाद की गई। इस आकलन में बोए गए क्षेत्र की स्थिति, मिट्टी में नमी, भूजल सूखा सूचकांक तथा दक्षिण-पश्चिम मानसून के



दौरान हुई वर्षा के आंकड़ों को शामिल किया गया। इस वर्ष दक्षिण-पश्चिम मानसून एक जून को शुरू हुआ और 30 सितंबर को समाप्त हुआ।

मानसूनी बारिश में 17 प्रतिशत की कमी
राज्य सरकार के अनुसार, तेलंगाना में मानसून के दौरान कुल 615.5 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई, जबकि सामान्य वर्षा 740.6 मिलीमीटर होनी चाहिए थी। इस प्रकार वर्षा में 17 प्रतिशत की कमी रही। राज्य के 33 जिलों में से 18 जिलों में सामान्य से कम बारिश दर्ज की गई।

सूखे का असर खरीफ फसलों की बुवाई के क्षेत्र पर भी पड़ा है। खरीफ फसलों का कुल क्षेत्रफल 139.28 लाख एकड़ से घटकर 126.06 लाख एकड़ रह गया। धान की खेती का क्षेत्रफल 18 प्रतिशत कम हुआ है। पहले धान की खेती 69.19 लाख एकड़ में होती थी, जो घटकर 57 लाख एकड़ रह गई।

सरकार ने चेतावनी दी है कि सूखे के कारण पेयजल, पशुओं के लिए पानी और कृषि कार्यों में पानी की कमी का खतरा बढ़ गया है। बिजली की कमी की आशंका भी जताई गई है। सरकारी आदेशों के अनुसार, प्रमुख और मध्यम जलाशयों में वर्तमान में 179.63 टीएमसी फुल पानी उपलब्ध है, जबकि उनकी कुल क्षमता 585 टीएमसी फीट है। इससे जलापूर्ति को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं।

सूखे से प्रभावित 31 जिले

सरकार द्वारा सूखाग्रस्त घोषित किए गए 31 जिले इस प्रकार हैं
आदिलाबाद, भद्राद्री-कोठागुडम, हनमकोंडा, जगतलाल, जंगांव, जयशंकर भूपालपल्ली, जोगुलांबा गडवाल, कामारेड्डी, करीमनगर, खम्मम, कोमाराम भीम आसिफाबाद, महबूबाबाद, महबूबनगर, मंचेरियल, मेडक, मेडचल-मलकाजगिरि, मुलुगु, नागरकुर्नूल, नलगोंडा, नारायणपेट, निर्मल, निजामाबाद, राजवा सिरसिल्ला, रंगारेड्डी, संगारेड्डी, सिद्दीपेट, सूर्यपेट, विकाराबाद, वनपती, वारंगल और यादाद्री-भुवनगिरि।

गंभीर सूखा: 111 मंडल।

मध्यम सूखा: 254 मंडल।

राहत कार्यों के लिए सरकार के निर्देश
सूखे की स्थिति से निपटने के लिए सरकार ने जिला प्रशासन को तत्काल राहत उपाय शुरू करने के निर्देश दिए हैं। प्रमुख कदम इस प्रकार हैं

1. किसानों को प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीए) के माध्यम से इनपुट सब्सिडी उपलब्ध कराई जाएगी। इसके लिए पात्र लाभार्थियों की सूची प्रकाशित की जाएगी।
2. पेयजल आपूर्ति बढ़ाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे।
3. पशुओं के लिए चारे की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी।
4. जरूरत पड़ने पर पशु शिविर स्थापित किए जाएंगे।

खड़गे के बयान पर प्रदर्शन



हैदराबाद, 27 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) तेलंगाना अल्पसंख्यक मोर्चा की संगठनात्मक बैठक मंगलवार को नामपल्ली स्थित भाजपा के राज्य कार्यालय में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष सरदार एस.डी. जगमोहन सिंह ने की। मोर्चा प्रभारी मुगा जयश्री ने उपस्थित पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए संगठन को मजबूत बनाने और सक्रियता से कार्य करने पर जोर दिया।

बैठक में तेलंगाना के सभी जिलों के अध्यक्षों एवं पदाधिकारियों ने भाग लिया। इस दौरान आगामी विधान परिषद सदस्य (एमएलसी) चुनाव और प्रस्तावित महा पदयात्रा की तैयारियों पर विस्तार से चर्चा की गई। संगठनात्मक समन्वय मजबूत करने, कार्यकर्ताओं को सक्रिय बनाने तथा जमीनी स्तर पर प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया। बैठक के बाद भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने राज्य कार्यालय के समीप विरोध प्रदर्शन किया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ की गई कथित अभद्र टिप्पणी के विरोध में कार्यकर्ताओं ने खड़गे का पुतला जलाया और नारेबाजी की। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष एस.डी. जगमोहन सिंह ने कहा, राजनीतिक मतभेद अपनी जगह हैं, लेकिन सम्मान की मर्यादा लांघना बदरित नहीं किया जाएगा। भारत के प्रधानमंत्री एक संवैधानिक पद पर हैं और उनका सम्मान हर हाल में होना चाहिए। भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा ऐसी टिप्पणियों के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करता रहेगा। जब प्रधानमंत्री के सम्मान पर आंच आएगी तो हम चुप नहीं बैठेंगे।

प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने नारे लगाते हुए कहा, हमारा विरोध मजबूत है, हमारी आवाज बुलंद है, हमारा संकल्प अडिग है! कार्यक्रम के अंत में सभी ने भारत माता की जय के नारे लगाए।

सूत्रधार साहित्यिक संस्था की मासिक गोष्ठी में डॉ. सी कामेश्वरी का शानदार प्रदर्शन

हैदराबाद, 27 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। साहित्य, कला, संस्कृति, शिक्षा एवं समाज सेवा के लिए समर्पित राष्ट्रीय संस्था सूत्रधार साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था, हैदराबाद की 83वीं मासिक गोष्ठी हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई। कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकार एवं अनुवादक डॉ. सी. कामेश्वरी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने अपने शैक्षणिक एवं साहित्यिक कार्यों की जानकारी प्रस्तुति के माध्यम से दी। गोष्ठी के दूसरे सत्र में कवियों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया।

संस्था की संपादिका एवं अध्यक्ष सरिता सुराणा ने उपस्थित सदस्यों और अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। रिमझिम झा ने स्वचरित सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। इसके बाद सरिता सुराणा ने बताया कि संस्था की मासिक गोष्ठी सामान्यतः दो सत्रों में आयोजित की जाती है। पहले सत्र में संबंधित माह में आने वाले पूर्ववर्ती

साहित्यकारों की जयंती के अवसर पर उनके साहित्यिक योगदान पर परिचर्चा होती है, जबकि दूसरे सत्र में काव्य गोष्ठी आयोजित की जाती है।

उन्होंने बताया कि संस्था पिछले छह वर्षों से निरंतर साहित्यिक गोष्ठियों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है। पिछले महीने एक नई पहल शुरू की गई, जिसका उद्देश्य पूर्ववर्ती साहित्यकारों के साथ-साथ समकालीन साहित्यकारों के लेखन और रचनात्मक योगदान से भी परिचित कराना है। इस पहल की पहली कड़ी में वरिष्ठ रंगकर्मी एवं नाटककार सुहास भट्टगार ने उनकी साहित्यिक और रंगमंचीय यात्रा के बारे में जानकारी प्राप्त की गई थी।

इस माह वरिष्ठ साहित्यकार एवं अनुवादक डॉ. सी. कामेश्वरी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। सरिता सुराणा ने उनका परिचय देते हुए बताया कि डॉ. कामेश्वरी ने अपने 33 वर्षों के अध्यापन

काल में 26 वर्षों तक भारतीय विद्या भवन के भवस विवेकानंद कॉलेज में सहायक प्रोफेसर एवं भाषा विभागाध्यक्ष के रूप में सेवाएं दी हैं। वर्तमान में वे केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद के नवीकरण पाठ्यक्रम से जुड़ी हुई हैं। इसके अंतर्गत वे शिक्षकों को भाषाविज्ञान, देवनागरी लिपि, हिंदी लिपि के मानकीकरण, व्याकरण और उसके विभिन्न पक्षों पर प्रशिक्षण देती हैं।

इसके बाद डॉ. कामेश्वरी ने पावरपॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से अपनी शैक्षणिक एवं साहित्यिक गतिविधियों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कार्तिक पद्मावती देवी ब्रह्मोत्सव के दौरान तीन दिन तक आंखों देखा हाल सुनाने के लिए उन्हें तिरुपति बालाजी देवस्थान से निमंत्रण मिला था। उन्होंने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में अनेक शोधपत्र प्रस्तुत किए हैं और कई पत्रिकाओं का संपादन भी किया है। उन्हें बी. एम. शास्त्री मेमोरियल पुरस्कार

5. वीबी-जी राम जी के तहत रोजगार सृजन के उपाय किए जाएंगे।

6. जिला कलेक्टर कृषि ऋणों के पुनर्गठन के लिए संबंधित बैंकों से अनुरोध करेंगे।

7. भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के नियमों के अनुसार ऋण की जबरन वसूली पर रोक संबंधी प्रावधानों का पालन सुनिश्चित किया जाएगा। केंद्र से मांगी जाएगी वित्तीय सहायता सूखे से निपटने के लिए केंद्र सरकार से सहायता प्राप्त करने की प्रक्रिया भी शुरू की जाएगी। योजना विभाग को एक विस्तृत ज्ञापन तैयार करके राजस्व (आपदा प्रबंधन) विभाग को सौंपने का निर्देश दिया गया है। इसके बाद यह ज्ञापन केंद्रीय कृषि एवं गृह मंत्रालयों को भेजा जाएगा।

सरकार राष्ट्रीय आपदा राहत कोष से केंद्रीय सहायता प्राप्त करने का प्रयास करेगी।

जिला कलेक्टरों के साथ-साथ कृषि, बागवानी और पशुपालन विभागों के निदेशकों तथा तेलंगाना राज्य नागरिक आपूर्ति निगम लिमिटेड के उपाध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक को तत्काल राहत उपाय शुरू करने के निर्देश दिए गए हैं।

संबंधित अधिकारियों को लाभार्थियों और खर्च का रजिस्टर बनाए रखने तथा राहत कार्यों की प्रगति संबंधी रिपोर्ट राजस्व (आपदा प्रबंधन) विभाग को सौंपने को कहा गया है।

365 मंडलों को सूखाग्रस्त घोषित करने की घोषणा बुधवार को होने वाली बैठक से ठीक एक दिन पहले की गई है। बुधवार को अल नीनो के प्रभाव से संबंधित मंत्रिमंडलीय उपसमिति और सभी राजनीतिक दलों के बीच बैठक प्रस्तावित है।

बैठक में राज्य सरकार अब तक उठाए गए कदमों की जानकारी देगी। वहीं, राजनीतिक दल सूखे से निपटने और प्रभावित किसानों एवं अन्य लोगों को राहत पहुंचाने के लिए सरकार से अपेक्षित कदमों के बारे में अपने सुझाव रखेंगे।

थार स्टेपनी चोरी!

दिनदहाड़े मलकपेट में घटना से दहशत



हैदराबाद, 27 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)।

हैदराबाद के मलकपेट इलाके के अकबर बाग में दिनदहाड़े महिंद्रा थार की स्टेपनी (अतिरिक्त पहिया) चोरी होने का मामला सामने आया है। एक अज्ञात व्यक्ति खड़ी एसयूवी का स्पेयर टायर कथित तौर पर चुराकर ले गया। चोरी की यह वारदात

इलाके में लगे सीसीटीवी कैमरों में कैद हो गई। मामले में चादरघाट पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराई गई है।

जानकारी के अनुसार, अकबर बाग इलाके में खड़ी महिंद्रा थार को निशाना बनाते हुए अज्ञात व्यक्ति ने दिनदहाड़े उसकी स्टेपनी चोरी कर ली। घटना के दौरान हुई गतिविधियां इलाके में लगे

सीसीटीवी कैमरों में दर्ज होने की जानकारी सामने आई है। हालांकि, फुटेज के आधार पर आरोपी की पहचान और चोरी की पूरी घटना के संबंध में विस्तृत जानकारी अभी सामने नहीं आई है।

घटना के संबंध में चादरघाट पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराई गई है। पुलिस मामले की जांच कर आरोपी की पहचान करने और चोरी से जुड़े तथ्यों का पता लगाने की दिशा में कार्रवाई कर सकती है। फिलहाल, जांच की स्थिति और किसी संदिग्ध की गिरफ्तारी को लेकर विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है।

दिनदहाड़े वाहन का अतिरिक्त पहिया चोरी होने की इस घटना ने रिहायशी इलाकों में खड़े वाहनों की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ा दी है। सीसीटीवी कैमरों में वारदात कैद होने के बावजूद आरोपी की पहचान और गिरफ्तारी के संबंध में अभी कोई आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। मामले में पुलिस की आगे की कार्रवाई का इंतजार है।

अन्नसेवा में बसती है मानवता, सेवा ही सच्ची ईश्वर भक्ति : शिव भगवान अग्रवाल

हैदराबाद। हैदराबाद राधे-राधे

ग्रुप के तत्वावधान में मंगलवार को बेगम बाजार स्थित भू देवी माता मंदिर के पास गौशाला के सामने नियमित अन्नसेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए शिव भगवान अग्रवाल ने कहा कि भूख के भोजन करना और जरूरतमंद को चेहरे पर मुस्कान लाना मानवता का सबसे सुंदर रूप है। निस्वार्थ भाव से किया गया ऐसा सेवा कार्य न केवल किसी की जरूरत पूरी करता है, बल्कि समाज में प्रेम, करुणा और सहयोग की भावना को भी मजबूत बनाता है।

उन्होंने कहा कि सेवा केवल धन से ही नहीं, बल्कि संवेद-नशील हृदय और दूसरों के प्रति जिम्मेदारी के भाव से भी की जाती है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य के अनुसार जरूरतमंदों की सहायता के लिए आगे आना चाहिए। जब हम जाति, धर्म और वर्ग का भेद भुलाकर मानवता को सर्वोपरि रखते हैं, तभी सामाजिक एकता और सद्भाव की भावना सशक्त



होती है।

शिव भगवान अग्रवाल ने राधे-राधे ग्रुप के सेवा कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि नियमित अन्नसेवा समाज के लिए प्रेरणादायक पहल है। ऐसे प्रयास लोगों को केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के हित में भी सोचने की प्रेरणा देते हैं। सेवा का उद्देश्य किसी प्रकार का दिखावा करना नहीं, बल्कि जरूरतमंदों के जीवन में सहारा और विश्वास जगाना होना चाहिए। समाज के लोग यदि सेवा को अपने जीवन का हिस्सा बना लें, तो अनेक जरूरतमंदों की परेशानियां कम हो सकती हैं और मानवीय रिश्तों में आत्मीयता बढ़ सकती है।

उन्होंने कहा कि भारतीय

संस्कृति में परोपकार और जीवमात्र के प्रति करुणा को विशेष महत्व दिया गया है। इसी भावना को अपने आचरण में उतारते हुए प्रत्येक व्यक्ति को समाज के प्रति अपने दायित्व निभाने चाहिए। नर सेवा ही नारायण सेवा है इस विचार को आत्मसात कर किया गया प्रत्येक प्रयास समाज को बेहतर बनाने में योगदान देता है।

इस अवसर पर जगत नारायण अग्रवाल, अनिल अग्रवाल धरसुवाले, पत्रालाल अग्रवाल, दीपचंद अग्रवाल, शिव भगवान अग्रवाल, लता गोयल, मीना अग्रवाल और शर्मिला अग्रवाल सहित राधे-राधे ग्रुप के सदस्य उपस्थित थे।

पटेल मार्केट का रास्ता बंद, व्यापारी परेशान

पंकज कुमार अग्रवाल ने की बैरिकेड हटाने की मांग



हैदराबाद, 27 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। रिकाबगंज स्थित पटेल मार्केट, पत्थर गड्ढी में कपड़ा व्यापारियों के आवागमन का रास्ता बंद किए जाने से व्यापारियों में चिंता व्याप्त है। रास्ता बंद होने से कारोबार, ग्राहकों की आवाजाही और माल की ढुलाई प्रभावित होने की आशंका जताई जा रही है। रिकाबगंज वेल्फेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष पंकज कुमार अग्रवाल ने प्रशासन से व्यापारियों के हितों को ध्यान में रखते हुए तत्काल उचित समाधान निकालने की मांग की है।

पंकज कुमार अग्रवाल ने कहा कि पटेल मार्केट में कपड़े का कारोबार लगभग 100 वर्षों से संचालित हो रहा है। यहां विभिन्न शहरों और राज्यों से व्यापारी खरीदारी तथा व्यापार के सिलसिले में आते हैं। ऐसे में आवागमन का रास्ता बंद होने से न केवल व्यापारियों, बल्कि ग्राहकों, हम्मालों, रिक्षा चालकों और स्थानीय लोगों को भी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। उन्होंने आशंका जताई कि कहीं प्रशासन द्वारा इस क्षेत्र से कपड़ा व्यापार को हटाने की मंशा से तो रास्ता बंद नहीं किया गया है। उन्होंने कहा कि बाजार का रास्ता केवल आने-जाने का माध्यम नहीं है, बल्कि हजारों व्यापारियों की रोजी-रोटी और आजीविका से जुड़ा

हुआ है। रास्ता बंद होने से व्यापारिक गतिविधियां प्रभावित होने के साथ ही स्थानीय लोगों की मुश्किलें भी बढ़ सकती हैं।

अग्रवाल ने बताया कि आवागमन बाधित होने से क्षेत्र में अव्यवस्था बढ़ सकती है और असामाजिक तत्वों को बढ़ावा मिलने की स्थिति पैदा हो सकती है। उन्होंने पुलिस एवं यातायात पुलिस के उच्चाधिकारियों से अपील की कि मामले को गंभीरता से लेते हुए व्यापारियों की समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर समाधान कराया जाए। पंकज कुमार अग्रवाल ने कहा कि प्रशासन को ऐसा समाधान निकालना चाहिए, जिससे यातायात व्यवस्था भी सुचारु बनी रहे और वर्षों से कारोबार कर रहे व्यापारियों को अनावश्यक परेशानी का सामना न करना पड़े। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से पटेल मार्केट, पत्थर गड्ढी में आवागमन रोकने के उद्देश्य से लगाए गए बैरिकेड हटाने तथा रास्ते को फिर से सुचारु करने की मांग की। उन्होंने कहा कि व्यापारियों के हितों की रक्षा करना और बाजार में सामान्य कारोबारी गतिविधियों को बनाए रखना आवश्यक है, ताकि यहां आने वाले व्यापारियों, ग्राहकों, हम्मालों, रिक्षा चालकों एवं स्थानीय निवासियों को राहत मिल सके।

नवपदजी की ओली की आराधना व पाण्डा संपन्न



हैदराबाद, 27 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)।

श्री सहस्रफणा पार्श्वनाथ जैन मंदिर, रसूलपुरा में नवपदजी की नौ दिवसीय ओली की आराधना श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक उल्लास के साथ संपन्न हुई। जैन रत्न रमेश पी. तातेड ने बताया कि इस दौरान श्रद्धालुओं ने नवपदजी की आराधना कर तप, त्याग एवं संयम की भावना को आत्मसात किया। इस अवसर पर तपस्वियों का पाण्डा करवाया गया। श्री रसूलपुरा संचयी की ओर से सभी तपस्वियों एवं लाभार्थी परिवारों का

बहुमान कर उनकी तपस्या और धर्म के प्रति समर्पण की अनुमोदना की गई। तातेड परिवार की ओर से भी तपस्वियों की तपस्या की अनुमोदना की गई।

संघ के अध्यक्ष निर्मल कोठारी, महामंत्री सुधीर कोठारी तथा ट्रस्टी अशोक मेहता, रमेश पी. तातेड, प्रकाशमलजी भंडारी, मुकेश कटारिया एवं विशाल भंडारी ने संपूर्ण तप आराधना में सहयोग देने वाले क्रांति, एतांश, सिद्धि एवं हरित सहित सभी सहयोगकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।